सांध्य दैनिक

नई दृष्टिबिंदु

सच की शक्ति, जनता की दृष्टि

PRGI Reg No - CTHIN/25/A3746

सु-विचार

" समय एक नदी की तरह है,
हम एक ही पानी को दोबारा नहीं छू सकते,
क्योंकि जो धारा बह चुकी है, वह फिर कभी नहीं आयेगी ...!! "
अज्ञात...

वर्ष–01 अंक–140 | संपादक आलोक तिवारी | दुर्ग, मंगलवार 09 जून 2026 | पृष्ठ 08 | मूल्य –2 रुपए

09
जून
मनीष पाण्डेय
प्रदेश कार्यसमिति सदस्य,
प्रभारी रायपुर भाजयुमो छ.ग.
अध्यक्ष-श्री राम जन्मोत्सव समिति,युवा विंग
समर्पित कार्यकर्ता, कुशल कार्यकर्ताओं
के प्रेरणास्त्रोत माननीय
श्री प्रेमप्रकाश पाण्डेय जी
को जन्मदिन की
हार्दिक शुभकामनाएं
नरेश छाबड़ा

मंगलवार 09 जून 2026

सांध्य दैनिक
नई दृष्टिबिंदु
सच की शक्ति, जनता की दृष्टि

दुर्ग-भिलाई

PRGI Reg No - CTHIN/25/A3746

सु-विचार
"वक्त देने वाला तोहफे देने वाले से बेहतर होता है...!!"
अज्ञात...

वित्त वर्ष 2027 के लिए सेल ने तय की रणनीतिक प्राथमिकताएं

EBITDA में 11.75% वृद्धि, 8148 करोड़ घटा कर्ज

नई दृष्टिबिंदु / नई दिल्ली

स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड ने वित्त वर्ष 2026 के मजबूत नतीजों के बाद वित्त वर्ष 2027 के लिए अपनी रणनीतिक प्राथमिकताएं तय की हैं। कंपनी मूल्य वर्धित और विशेष इस्पात उत्पादों की हिस्सेदारी बढ़ाने, ग्राहक जुड़ाव और लागत अनुकूलन पर जोर देगी। सेल का यह कदम भारत सरकार के विकसित भारत @2047 के लक्ष्य के अनुरूप है।

लाभ और EBITDA में जोरदार उछाल

वैश्विक अस्थिरता के बीच सेल ने वित्त वर्ष 2026 में एइक्ळ्उ्ञ में 11.75 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की। कर पश्चात लाभ में 50 प्रतिशत और कर पूर्व लाभ में 44 प्रतिशत का इजाफा हुआ। कंपनी ने पिछले वर्ष की तुलना में कर्ज में 8148 करोड़ रुपये की कमी भी की है।

CMD बोले : ग्राहक-केंद्रित रहेंगे

सेल के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक डॉ. अशोक कुमार पांडा ने कहा कि वित्त वर्ष 2026 का प्रदर्शन विपणन पहल, उत्पादन सुधार और बेहतर वित्तीय रणनीतियों का नतीजा है। आगे हमारा ध्यान ग्राहक-केंद्रित दृष्टिकोण, लागत अनुकूलन और विशेष इस्पात उत्पादों के विस्तार पर रहेगा। कायर्शील पूंजी उधारी को और कम करेंगे जिससे लाभप्रदता बढ़ी है।

28 नए उत्पाद किए विकसित

वित्त वर्ष 2026 में सेल ने खुदरा नेटवर्क विस्तार, निर्यात विविधीकरण, गोदामों का आधुनिकीकरण और ब्रांड प्रचार जैसी पहलें कीं। कोक दर, ईंधन दर, ब्लास्ट फर्नेस उत्पादकता और विशिष्ट ऊर्जा खपत में कंपनी ने सर्वश्रेष्ठ तकनीकी-आर्थिक मानक हासिल किए। इस दौरान 28 नए उत्पाद भी विकसित किए गए।

कंपनी सतत इस्पात निर्माण के लिए पर्यावरण-अनुकूल प्रौद्योगिकियों को अपनाने और लाभप्रदता बढ़ाने पर काम करेगी।

जवाहरलाल नेहरू चिकित्सालय को ब्रेस्टफीडिंग फ्रेंडली हॉस्पिटल का दर्जा

देश के चुनिंदा संस्थानों में शामिल, 2029 तक रहेगी मान्यता

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

सेल-भिलाई इस्पात संयंत्र के जवाहरलाल नेहरू चिकित्सालय एवं अनुसंधान केंद्र को ब्रेस्टफीडिंग फ्रेंडली हॉस्पिटल की प्रतिष्ठित मान्यता मिली है। यह दर्जा ब्रेस्टफीडिंग प्रमोशन नेटवर्क ऑफ इंडिया और एसोसिएशन ऑफ हेल्थ प्रोवाइडर्स ऑफ इंडिया ने दिया है। मान्यता 05 जून 2026 से 04 जून 2029 तक प्रभावी रहेगी।

इन मानकों पर खरा उतरा अस्पताल : अस्पताल ने विश्व स्वास्थ्य संगठन के सफल स्तनपान के दस चरण और भारत सरकार के माँ कार्यक्रम को प्रभावी रूप से लागू किया है। जन्म के पहले घंटे में स्तनपान, माँ-शिशु के बीच स्किन टू स्किन कोन्टैक्ट, रूमिंग-इन व्यवस्था, विशेषज्ञ परामर्श और व्यावसायिक प्रभावों से मुक्त वातावरण जैसी व्यवस्थाओं के सफल क्रियान्वयन पर यह मान्यता मिली है।

डॉ. अरुण गुप्ता और डॉ. गिरधर ज्ञानी ने दिया सम्मान : यह सम्मान बीपीएनआई के केंद्रीय समन्वयक डॉ. अरुण गुप्ता तथा एएचपीआई के महानिदेशक डॉ. गिरधर ज्ञानी ने प्रदान किया। प्रक्रिया में यूनिसेफ, इंडियन एकेडमी ऑफ पीडियाट्रिक्स और आईबीफैन का सहयोग रहा।

इनका रहा अहम योगदान : मुख्य चिकित्सा अधिकारी प्रभारी डॉ. विनीता द्विवेदी, मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. कौशलेन्द्र ठाकुर और डॉ. उदय कुमार के नेतृत्व में यह उपलब्धि मिली। बाल रोग विभागाध्यक्ष डॉ. सम्बिता पांडा, नवजात शिशु विभाग प्रभारी डॉ. सुबोध साहा और बीएफएचआई समन्वयक डॉ. माला चौधरी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। प्रसूति एवं स्त्री रोग विभाग के साथ नर्सिंग टीम और टीम लीडर शैला अब्राहम के योगदान की भी सराहना की गई।

इस मान्यता के साथ जेएलएनएच एंड आरसी देश के उन चुनिंदा संस्थानों में शामिल हो गया है जो माताओं और नवजात शिशुओं को स्तनपान आधारित सवोत्तम देखभाल देते हैं।

10 लाख की हेरोइन के साथ महिला गिरफ्तार

जामुल पुलिस ने बीएनएस स्कूल के पास दबिश देकर 49 .8 ग्राम चिट्टा बरामद किया

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई-दुर्ग

नशा मुक्ति अभियान के तहत जामुल पुलिस ने अवैध हेरोइन बेचने वाली महिला को गिरफ्तार किया है। उसके पास से 49.8 ग्राम चिट्टा, नकदी और मोबाइल बरामद हुआ। जब्त सामान की कुल कीमत करीब 9.97 लाख रुपये है।

निर्माणाधीन स्कूल के पास हो रही थी बिक्री

थाना जामुल पुलिस को मुखबिर से सूचना मिली थी कि हाउसिंग बोर्ड क्षेत्र में निर्माणाधीन बीएनएस स्कूल के पास एक महिला हेरोइन बेच रही है। पुलिस टीम ने घेराबंदी कर महिला आरक्षक की मौजूदगी में तलाशी ली। आरोपी के कब्जे से 49.8 ग्राम हेरोइन, बिक्री से मिले 1,000 रुपये नगद और एक कीपैड मोबाइल मिला।

एनडीपीएस एक्ट में केस दर्ज

पुलिस ने आरोपी राजविन्दर कौर, उम्र 25 वर्ष, निवासी एलआईजी/312, हाउसिंग बोर्ड, भिलाई के खिलाफ थाना जामुल में अपराध क्रमांक 288/2026 धारा 21(बी), 27(ए) एनडीपीएस एक्ट के तहत मामला दर्ज किया। आरोपी को गिरफ्तार कर न्यायिक रिमांड पर न्यायालय में पेश किया गया। आरोपी से जप्त सामग्री में बरामद हेरोइन की अनुमानित कीमत 9,96,000 रुपये, मोबाइल की कीमत 300 रुपये और नगदी 1,000 रुपये है। पुलिस ने बताया कि आरोपी अवैध आर्थिक लाभ के लिए मादक पदार्थ बेच रही थी। दुर्ग पुलिस ने नागरिकों से अपील की है कि नशे से जुड़ी अवैध गतिविधि की सूचना तुरंत पुलिस को दें। सूचना देने वाले की पहचान गोपनीय रखी जाएगी।

मुंगेली में सात भैंसों की चोरी का खुलासा, दो आरोपी गिरफ्तार

नई दृष्टिबिंदु / मुंगेली

चिल्फी थाना क्षेत्र के ग्राम डिन्डौरी में 7 भैंसों की चोरी का पुलिस ने खुलासा किया है। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक भोजराम पटेल के निर्देश पर कार्रवाई करते हुए पुलिस ने दो आरोपियों को गिरफ्तार कर न्यायिक रिमांड पर भेज दिया।

तालाब के पास से गायब हुई थीं भैंस

प्रार्थी अशोक कुमार यादव निवासी डिन्डौरी ने 06 जून को रिपोर्ट दर्ज कराई कि उसने 7 भैंसों को तालाब के पास चरने छोड़ा था, जो वापस नहीं लौटीं। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक ने मामले में त्वरित कार्रवाई के निर्देश दिए।

80 हजार में बेची थीं भैंस

07 जून को मुखबिर से सूचना मिली कि ग्राम दयाली नवागांव निवासी संतराम डहरिया और महेश डहरिया ने भैंसों को अपना बताकर बलराम यादव व रविंद्र यादव से औरापानी तक हंकवाया था। पूछताछ में महेश डहरिया उम्र 74 वर्ष और संतराम डहरिया उम्र 42 वर्ष ने चोरी कबूल की। आरोपियों ने बताया कि उन्होंने भैंसों को 80 हजार रुपये में ग्राम सेलवार, जिला डिंडोरी निवासी गुड्डा उर्फ असलम खान को बेच दिया।

30 हजार नगद जब्त

पुलिस ने आरोपियों के कब्जे से बिक्री राशि में से 30 हजार रुपये नगद बरामद किए। थाना चिल्फी में अपराध क्रमांक 60/26 धारा 303(3), 3(5) बीएनएस के तहत मामला दर्ज कर महेश सतनामी और संतराम सतनामी को गिरफ्तार किया गया। तीसरे आरोपी गुड्डा उर्फ असलम खान की तलाश जारी है।

कार्रवाई में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक नवनीत कौर छाबड़ा, उप पुलिस अधीक्षक हरविंदर सिंह के मार्गदर्शन में निरीक्षक रघुबीर लाल चंद्र, प्रशिक्षु उप निरीक्षक केसो राम, सउनि मनक राम ध्रुव, कुंदन राजपूत, प्र.आर. श्याम डहरिया, बलदेव राजपूत तथा आरक्षक नागेश साहू एवं पवन गंधर्व का विशेष योगदान रहा।

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय की अध्यक्षता में केबिनेट की बैठक शुरु

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर । मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय की अध्यक्षता में मंत्रालय महानदी भवन में केबिनेट की बैठक प्रारंभ हुई है। कई महत्वपूर्ण मसलों पर निर्णय होने की संभावना जताई जा रही है। समाचार लिखे जाने तक बैठक जारी थी। बैठक में सभी मंत्रीगण शामिल हैं।

आईपीएल ऑनलाइन सट्टा मामले में फरार आरोपी गिरफ्तार

नागपुर से पकड़ा गया, न्यायिक रिमांड पर भेजा गया जेल

नई दृष्टिबिंदु / राजनांदगांव-घुमका

कृषि फार्म में आईपीएल क्रिकेट पर ऑनलाइन सट्टा खिलाने के मामले में फरार चल रहे आरोपी को घुमका पुलिस ने गिरफ्तार किया है। आरोपी को न्यायालय में पेश कर न्यायिक रिमांड पर जेल भेज दिया गया।

ठेलकाडीह बस स्टैंड से पकड़ा गया आरोपी : पुलिस अधीक्षक सुश्री अंकिता शर्मा के निर्देश पर पुलिस टीम को मुखबिर से सूचना मिली कि 03 अप्रैल 2026 को ग्राम खैरझिटी के रतन कृषि फार्म में ऑनलाइन आईपीएल सट्टा प्रकरण का फरार आरोपी ठेलकाडीह बस स्टैंड में दिखा है। टीम ने घेराबंदी कर आरोपी को पकड़ा।

नागपुर का रहने वाला है आरोपी : गिरफ्तार आरोपी जसमीत सिंह भाटिया पिता सुरेन्द्र सिंह भाटिया उम्र 36 साल है। उसका स्थायी पता वार्ड नंबर 13 खण्डूवारा डोंगरगढ़ जिला राजनांदगांव है। वर्तमान में वह इंदिरा चौक वार्ड नंबर 28 मानेवारा नागपुर में रह रहा था। पूछताछ में आरोपी ने 03 अप्रैल को रतन कृषि फार्म में ऑनलाइन आईपीएल सट्टा खिलाने में सहयोग करना स्वीकार किया।

कार्रवाई अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक कीर्तन राठौर और पुलिस अनुविभागी अधिकारी डोंगरगांव मंजुलता बाज के मार्गदर्शन में हुई। टीम में सउनि कोदूराम नागवंशी, आरक्षक दुर्गेश कुमार साहू और आरक्षक तारकेश्वर साय शामिल रहे।

INDIA गठबंधन की दिल्ली में हुई अहम बैठक, पांच बिंदुओं पर बनी सहमति

खरगे बोले : संविधान और लोकतंत्र के लिए हर लड़ाई लड़ेंगे

नई दृष्टिबिंदु / नईदिल्ली

कॉन्स्टीट्यूशन क्लब में इंडिया गठबंधन की महत्वपूर्ण बैठक हुई। इसमें कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे, सीपीपी चेयरपर्सन सोनिया गांधी, नेता विपक्ष राहुल गांधी और गठबंधन के सभी प्रमुख नेता शामिल हुए। बैठक के बाद कांग्रेस अध्यक्ष खरगे ने पत्रकारवार्ता को संबोधित किया।

संविधान और जनता के अधिकारों के लिए अडिग : खरगे

मल्लिकार्जुन खरगे ने कहा कि INDIA गठबंधन संविधान, लोकतंत्र और जनता के अधिकारों के लिए अडिग होकर खड़ा है। गठबंधन हर लड़ाई लड़ने को तैयार है। उन्होंने बताया कि बैठक में पांच बिंदुओं पर सहमति बनी है। हालांकि उन्होंने इन बिंदुओं का विस्तृत ब्यौरा नहीं दिया।

आगे की रणनीति पर मंथन

सूत्रों के मुताबिक बैठक में मौजूदा राजनीतिक हालात, संसद सत्र और आगामी चुनावों को लेकर रणनीति पर चर्चा हुई। गठबंधन के नेताओं ने एकजुटता के साथ जनता के मुद्दे उठाने पर जोर दिया। बैठक में विपक्षी एकता को और मजबूत करने के तरीकों पर भी बात हुई। कांग्रेस अध्यक्ष ने कहा कि गठबंधन के सभी दल संविधान की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध हैं। जनता से जुड़े मुद्दों पर संसद से सड़क तक संघर्ष जारी रहेगा।

सोमनी स्वास्थ्य केंद्र में नाबालिग को गर्भवती बताने पर बीएमओ निलंबित

नई दृष्टिबिंदु / राजनांदगांव

जांच रिपोर्ट में लापरवाही, पुलिस ने भी रातभर की पूछताछ

सोमनी स्वास्थ्य केंद्र में 14 वर्षीय नाबालिग को गलत तरीके से गर्भवती बताने के मामले में ब्लॉक मेडिकल ऑफिसर डॉ. एनके टंडन को निलंबित कर दिया गया है। लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग ने आदेश जारी किया है।

फर्जी प्रेग्नेंसी रिपोर्ट कांड : पुलिस-स्वास्थ्य विभाग की घोर लापरवाही हुआ बेनकाब

जांच रिपोर्ट सौंपते ही अफसरों में हड़कंप, दोषियों पर गिरेगी गाज, नाबालिग से प्रताड़ना के मामले में प्रशासन सख्त

...की खुली पोल

सूत्रों के मुताबिक जांच में इस पूरे प्रकरण में जिम्मेदार अधिकारी-कर्मचारियों की भूमिका की गहन पड़ताल की गई। जांच के दौरान कई चौंकाने वाले तथ्य और प्रक्रियागत खामियां उजागर हुई हैं। गलत प्रेग्नेंसी रिपोर्ट तैयार करने से लेकर नाबालिग से जुड़े मामले में बरती गई लापरवाही ने दोनों विभागों की कार्यप्रणाली की पोल खोल दी है।

थाना सोमानी

प्रशासन का सख्त रुख, नहीं बख्शे जाएंगे दोषी

मामले की गंभीरता को देखते हुए जिला प्रशासन ने शुरू से सख्त रुख अपनाया था। निष्पक्ष जांच के लिए दो अलग-अलग उच्चस्तरीय जांच दल गठित किए गए थे। टीमों ने सभी पक्षों के बयान, दस्तावेज और साक्ष्यों के आधार पर रिपोर्ट तैयार की है।

कई अफसर-कर्मचारी रडार पर

सूत्रों का दावा है कि जांच रिपोर्ट में कई स्तरों पर लापरवाही उजागर हुई है और जिम्मेदारी तय कर दी गई है। दोषी पाए जाने वाले अधिकारियों और कर्मचारियों के खिलाफ विभागीय एवं प्रशासनिक कार्रवाई की तैयारी पूरी हो चुकी है। माना जा रहा है कि 24 घंटे के अंदर प्रशासन इस मामले में बड़ा फैसला ले सकता है। निलंबन से लेकर बर्खास्तगी तक की कार्रवाई संभव है।

जिले की नजर टिकी प्रशासन के फैसले पर

फर्जी प्रेग्नेंसी रिपोर्ट के आधार पर खड़े हुए इस विवाद ने पुलिस और स्वास्थ्य विभाग की साख पर बट्टा लगाया है। नाबालिग से जुड़े आरोपों ने पूरे सिस्टम पर सवाल खड़े कर दिए थे। अब जब जांच रिपोर्ट में लापरवाही साबित हो चुकी है, पूरे जिले की नजर प्रशासन के अगले कदम पर टिकी है। अगर दोषियों पर सख्त कार्रवाई होती है तो यह मामला प्रशासनिक जवाबदेही और लापरवाही के खिलाफ नजीर बनेगा। अब देखना है कि प्रशासन सिर्फ खानापूर्ति करता है या दोषियों को उनके अंजाम तक पहुंचाता है।

प्रेग्नेंसी किट से बताया गर्भवती, सोनोग्राफी नहीं की

बीमार नाबालिग को परिजन सोमनी स्वास्थ्य केंद्र में जांच के लिए ले गए थे। वहां कर्मचारियों ने सिर्फ प्रेग्नेंसी किट की जांच के आधार पर उसे गर्भवती बता दिया। नियम के मुताबिक सोनोग्राफी के बाद ही प्रेग्नेंसी की अंतिम रिपोर्ट जारी की जाती है। प्रक्रिया का पालन किए बिना अस्पताल ने पुलिस को सूचना दे दी।

जिला अस्पताल में रिपोर्ट निगेटिव निकली

पुलिस को सूचना मिलने पर नाबालिग को जिला अस्पताल भेजा गया। वहां दोबारा जांच में रिपोर्ट निगेटिव आई। जिला प्रशासन ने मामले की जांच के लिए कमेटी बनाई थी। कमेटी की रिपोर्ट के आधार पर शासन ने बीएमओ डॉ. एनके टंडन को लापरवाही का दोषी मानते हुए निलंबित किया।

टीआई और हवलदार पहले ही सस्पेंड

सूचना के बाद सोमनी पुलिस नाबालिग को रात में थाने ले गई और पूरी रात पूछताछ की। परिजनों ने इसे प्रताड़ना बताकर एसपी से शिकायत की। एसपी ने तत्काल थाना प्रभारी अरुण नामदेव और महिला हवलदार राजश्री सिंह को निलंबित कर दिया था। बाल संरक्षण आयोग ने पुलिस को पूरे मामले की दीघर्कालीन जांच प्रतिवेदन प्रस्तुत करने का निर्देश दिया है।

संपादकीय

सोशल मीडिया की ताकत जंतर मंतर में तो दिखी नहीं

कई बार जो जैसा दिखता है,वह वाकई में वैसा नहीं होता है ।सोशल मीडिया में काकरोच जनता पार्टी के सदस्य या फालोवर की संख्या तो ढाई करोड़ बताई गई, इससे ऐसा नरेटिव बनाया गया कि मोदी सरकार के खिलाफ कोई बहुत बड़ा आंदोलन शुरू हो गया है और यह आंदोलन ऐसा होगा कि मोदी सरकार को सत्ता छोड़ने को मजबूर होना पड़ेगा। जब तक यह आंदोलन सोशल मीडिया तक सीमित रहा लोगों को लगता रहा कि वाकई में देश के युवाओं में मोदी सरकार को लेकर बहुत गुस्सा है और देश का जेन जी जल्द ही सड़क पर उतरेगा और मोदी सरकार का हश्र भी बांग्लादेश,नेपाल व श्रीलंका की सरकारों जैसा होगा ।विपक्ष के नेता भी शुरू में खुश थे कि चलो युवा अब काकरोच जनता पार्टी के माध्यम से अपनी नाराजगी जताने सड़कों पर उतरेंगे और मोदी सरकार के खिलाफ जो काम वह 12 सालों में नहीं कर सके वह काम आसानी से काकरोच जनता पार्टी करेगी।

काकरोच जनता पार्टी का जन्म ही डिजिटली हुआ है। उसका गठन जमीन पर परंपरागत राजनीतिक दलों की तरह नहीं हुआ है। इसलिए यह कितना हकीकत है और कितना फसाना है, इसका पता शुरू में लगना मुश्किल था इसलिए हर फसाने की तरह इस फसाने की चर्चा तो बहुत हुई। कहने वालों ने क्या नहीं कहा-यह न तो पार्टी है, यह न तो जनता है, यह न तो दूसरे आंदोलनों की तरह आंदोलन है,यह तो एक क्षण है, यह युवाओं के गुस्से की लहर, यह तो गुस्से की सुनामी है,यह तो भारत के जेनजी की लहर है,यह भावनाओं का ज्वार है,यह देश के युवाओं की ऊर्जा का ऐसा महाविस्फोट है जिसमें मोदी सरकार का जाना तय है। यह सोशल मीडिया के आभासी जगत में पैदा हुआ इसलिए इसकी जमीनी हकीकत को किसी को कुछ पता नहीं था सब कुछ दिनों में इसके ढाई करोड़ फालोवरों की बात इस तरह कर रहे कि जब यह ढाई करोड़ काकरोच जमीन पर आएंगे को क्या नहीं हो सकता। सब इंतजार कर रहे थे कि ढाई करोड़ काकरोज कब जमीन पर दिखाई देंगे। इसे तो सब सच मान रहे थे ढाई करोड़ की संख्या बहुत ज्यादा होती है। लेकिन लोगों का यकीन तो तब आता जब ढाई करोड़ काकरोज दिल्ली की जमीन पर दिखाई देते।

काकरोच जनता पार्टी के सुप्रीमो अभिजीत दीपके ने जब यह घोषणा की कि उनकी पार्टी जंतर मंतर पर नीट समेत दूसरी तमाम परीक्षाओं के पेपरलीक मामले में विरोध प्रदर्शन किया जाएगा तो लोगों को लगा अब आया है मौका काकरोच पार्टी की हकीकत जानने का। ढाई करोड़ फालोवर होने की वजह सब यह उम्मीद कर रहे थे कि दिल्ली में आज तक जैसा आँदोलन नहीं हुआ वैसा आंदोलन काकरोच जनता पार्टी करके दिखाएगी। लोग कम से कम उम्मीद कर रहे थे कि कम से कम पांच दस लाख तो इस आंदोलन में जुटेंगे ही लेकिन ऐसा नहीं हुआ और काकरोज जनता पार्टी की पोल खुल गई जब गिनती के एक दो हजार ही लोग जंतर मंतर पर पहुंचे। यहां भीड़ का नजारा इसलिए दिख रहा था कि हजार पंद्रह सौ पुलिस वाले ही थे, कुछ सौ पत्रकार व यूट्यूबर थे, वैसे भी जंतर मंतर शनिवार इतवार को सौ दो सौ लोग रहते ही हैं।

यानी डिजिडल मीडिया में जो करोड़ो की बात की जा रही थी वह जमीन पर दो हजार तक सिमट कर रह गई। ऐतिहासिक प्रदर्शन एक सामान्य प्रदर्शन जैसा रहा। आंदोलन करने वाले सोच रहे थे कि उनको आंदोलन की अनुमति नहीं मिलेगी तो उनको शक्ति प्रदर्शन का मौका मिलेगा लेकिन पुलिस ने आसानी से आंदोलन की अनुमति दे दी की जाओ जितनी ताकत दिखानी है जंतरमंतर पर दिखाओ। काकरोच जनता पार्टी के पास ताकत तो आभासी दुनिया में थी। जमीन पर तो उनके पास हजार दो हजार लोगों का ताकत थी। इसे ताकत कौन मानेगा कौन मानेगा कि यह काकरोच पार्टी इस देश में युवाओं के भले के लिए कुछ कर सकती है। काकरोच और उनके नेताओं को लगा कि पहला इंप्रेशन तो ठीक से पड़ा नहीं तो क्या हुआ ।अगले प्रदर्शन की चेतावनी सरकार को दे कर गए हैं कि केंद्रीय मंत्री को सात दिन में नही हटाया तो अगले शनिवार को इसके विरोध में काकरोच जनता पार्टी फिर प्रदर्शन करेगी।

अब किसी को यकीन नहीं है कि यह काकरोच पार्टी कुछ कर सकती है क्योंकि कुछ दिनों में ही देश के राजनीतिक दलों को समझ आ गया है कि हम तो इसे शक्तिमान समझ रहे थे यह तो उसी झाड़ूवाले का चेला है ।जैसे ही पता चला काकरोच झाड़ू का बदला हुआ रूप है। देश के विपक्षी दल दो हिस्सों में बंट गए एक जो इसका समर्थन कर रहे हैं और कांग्रेस इसका विरोध कर रही है. इसका मजाक उड़ा रही है। क्योंकि कांग्रेस के लिए सबसे बड़े नेता राहुल गांधी है, उनसे बडा नेता किसी को नहीं मान सकते। राहुल गांधी भी तो युवाओं के गुस्से का उपयोग कर खुद युवाओं का बड़ा नेता बनना चाहते है और काकरोच पार्टी ने ऐन मौके पर अभिजीत दीपके के रूप में एक नेता सामने खड़ा कर दिया है और युवाओं से कहा जा रहा है कि यह युवाओं का नेता है. यही युवाओं का भला कर सकता है, यह बात कांग्रेस को भली लग नहीं सकती कि उनके युवा नेता के सामने कोई दूसरा युवा नेता खड़ा हो। कांग्रेस चाहती थी यह आंदोलन सफल न हो और ऐसा ही हुआ है। इसका मतलब यह नहीं है कि राहुल गांधी के लिए पूरा मैदान खाली है। झाड़ू वाला दिल्ली के मैदान नहीं है इसका मतलब यह नहीं है कि कोई दिल्ली के मैदान पर कब्जा कर लेगा। झाड़ू वाला दिल्ली के मैदान में न हो कर भी दिल्ली के मैदान में है,वह नए रूप में है। नए अवतार में है।

10 जून : देश की सुरक्षा और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी

शिवप्रकाश

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी 10 जून को संवैधानिक चुनाव पद्धति से चयनित सबसे अधिक कार्यकाल वाले प्रधानमंत्री हो जायेंगे । मोदी देश के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू का 4398 दिनों का रिकॉर्ड ध्वस्त कर 4399 दिन अपनी देश सेवा के पूर्ण करेंगे। प्रधानमंत्री मोदी अपने मुख्यमंत्री एवं प्रधानमंत्री दोनों के कार्यकाल को जोड़कर 25 वर्षों के साथ ही 9007 दिनों की अनवरत राष्ट्र सेवा को भी पूर्ण करेंगे। यह उत्साही ,अविश्रांत, अनथक कमयोगी की यात्रा है ।

देश के विकास के लिए अनेक कीतिर्मान गढ ? वाले कठोर निर्णयों के लिए तो 12 वर्षो का उनका कार्यकाल अविस्मरणीय रहेगा ही साथ-साथ देश की सुरक्षा के लिए भी उनके योगदान और भुलाया नहीं जा सकता ।राष्ट्र प्रथम के सिद्धांत का अनुपालन करते हुए उन्होंने आतंकवाद से प्रति जीरो टॉलरेंस की नीति को अपनाया ।13 जून 2014 को भारतीय सेना के साउथ ब्लॉक में स्थित रक्षा वॉर रूम में सेना उच्च अधिकारियों के साथ संवाद एवं रक्षा तैयारियों की समीक्षा कर ही अपनी सुरक्षा के प्रति प्राथमिकता को स्पष्ट कर दिया था। जब समस्त देश दीपावली पर दीपों से अपने-अपने घरों को प्रकाशमान करता है तब प्रधानमंत्री सीमा पर सुरक्षा में तैनात जवानों के बीच में उपस्थित रहकर देश उनके साथ है ऐसा संदेश देते हैं ।सियाचिन से प्रारंभ कर 12 वर्षों में 12 स्थानों पर जाकर उन्होंने अपनी सीमा सुरक्षा के प्रति प्रतिबद्धता प्रकट की है।

आचार्य चाणक्य ने राष्ट्र की सुरक्षा के संदर्भ में कहा था कि मजबूत सेना के बिना राष्ट्र सुरक्षित नहीं रह सकता। 1962 में चाइना युद्ध में हमारी पराजय तथा 1964 में चाइना के परमाणु परीक्षण के बाद निर्मित निराशाजनक स्थिति से उबारने के लिए भारत को भी परमाणु शक्ति युक्त होना चाहिए , यह मांग जनसंघ ने 4 दिसम्बर 1964 को पटना अविवेशन में की थी। तब कांग्रेस सहित समस्त दलों ने इस माँग का उपहास किया था ।जनसंघ के इसी संकल्प की पूर्ति को 11 मई 1998 को प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने पोखरण विस्फोट कर पूर्ण किया था ।प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के आने के बाद 2014 रक्षा विभाग का बजट 2.27 लाख की तुलना में 3 गुना 7.85 लाख करोड़ हो गया। आज हम 100 से अधिक देशों को अपने रक्षा उत्पाद बेच रहे हैं ।अब हमारा निर्यात में 2014 की तुलना में 686 करोड़ से बढ़कर 2025 -26 में 38424 करोड़ अर्थात 56 गुना वृद्धि हुई है ।अब हम हाइपर सोनिक मिसाइल , ब्रह्मोस ,बैलिस्टिक मिसाइल , एयर डिफेन्स एवं रडार सिस्टम को ध्वस्त करने वाले रुद्रम -2, प्रलय, आकाश एयर डिफेन्स मिसाइल बना रहे हैं ।भारत का स्वदेशी आईएनएस विक्रांत, राफेल, एस - 400 विमानों से हम युक्त हैं। आर्मेनिया ने येरेवान रिपब्लिक स्क्वायर में भारत में बनी आकाश एयर डिफेन्स मिसाइल एवं पिनाका रॉकेट लौनचर्स का प्रदर्शन भारतीयों को मस्तक ऊँचा करता हैं। 15 अगस्त 2025 को लाल किला से प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि स्वदेशी क्षमताओं, मेड इन इंडिया हथियारों ने सिद्ध किया कि राष्ट्रीय सुरक्षा विदेशी निर्भरता पर नहीं टिक सकती। इसी का परिणाम ऑपरेशन सिंदूर में हमारी सेना ने 22 मिनट में ही सभी निर्धारित लक्ष्य पूर्ण कर किए थे। 72000 करोड़ की लागत से तैयार होने वाली ग्रेट निकोबार परियोजना भारत की आर्थिक समृद्धि, सामुद्रिक रणनीति एवं सुरक्षा का आधार बनेगी।

सेना में स्वदेशी रक्षा उत्पाद, रक्षा बजट में वृद्धि, सेना के आधुनिकीकरण के साथ-साथ आंतरिक सुरक्षा पर सफलता प्राप्त करना ऐतिहासिक कदम है । 2014 से पूर्व पाकिस्तान प्रेरित आतंकवाद चरम पर था। केवल कश्मीर ही नहीं देश का कोई शहर सुरक्षित नहीं था। मुंबई, जयपुर, दिल्ली, काशी सहित अनेक आतंकी घटनाएं आज भी हमको विचलित करती हैं। सुरक्षाबलों को आधुनिक शस्त्र, बुलेट प्रूफ जैकेट, टेरर फंडिंग पर रोक हेतु नो मनी फॉर टेरर जैसे कड़े कदम , एफएटीएफ के माध्यम से वित्तीय दबाव के साथ सर्जिकल एवं बालाकोट एयर स्ट्राइक के माध्यम से आतंकी नेटवर्क को ध्वस्त करने का कार्य किया। ऑपरेशन सिंदूर ने पाकिस्तान में स्थापित आतंकी केंद्रों का सफाया एवं पाकिस्तान के सुरक्षा तंत्र को ध्वस्त किया। 370 को हटाने का ऐतिहासिक निर्णय कर देश की एकात्मता को सुदृढ़ किया है ।

इस ऐतिहासिक दिन को देश ही नहीं सम्पूर्ण विश्व स्मरण करेगा जब हमने कहा कि 31 मार्च 2026 वामपंथ प्रेरित नक्सलवाद से हम मुक्त हो रहे हैं। 2024 में 126 जिले नक्सलवादी आतंक से युक्त थे ।2024 में ही केवल 290 नक्सली मारे गए। 1090 गिरफ्तार हुए। 881 ने आत्मसर्पण कर भारत की मुख्यधारा में लौटने का संकल्प किया 7 अब बस्तर सहित सभी नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में विकास की बयार बह रही है।

घुसपैठिये देश की लोकतांत्रिक व्यवस्था, सुरक्षा के लिए खतरा एवं जनसांख्यिकी असंतुलन निर्माण कर रहे हैं । भारत सरकार ने इस संकट से उबरने के लिए डिटेक्ट , डिलीट , डिपोर्ट नीति के अंतर्गत कठोर कार्यवाही की है। सीमा की निगरानी को सख्त किया है। बंगाल भाजपा विजय के पश्चात बांग्लादेशी घुसपैठियों की बांग्लादेश की ओर वापसी की लाइन हम देख रहे हैं। 15,106 किलोमीटर सीमा सोती रेखा से जागती दीवार लक्ष्य में लेज? वॉल, वाइब्रेशन सेंसर, नाइट विज? कैमरा का उपयोग हो रहा है। सीमा सुरक्षा के लिए 49 त्न बजट वृद्धि कर 5597 करोड़ निर्धारित किया गया है।

अदृश्य युद्ध के माध्यम से भारत की साइबर सुरक्षा को चुनौती देने का कार्य भारत विरोधी शक्तियां कर रही हैं। राज्यसभा में प्रस्तुत रिपोर्ट के अनुसार भारत ने लगभग 54 लाख साइबर शिकायतों एवं 31594 करोड़ रुपयों के ठगी के प्रयासों का सामना करने में भारत सफल रहा। भारत सरकार ने 2024 में साइबर कमांडो व्यवस्था निर्माण का साइबर सुरक्षा प्रदान करने की व्यवस्था की है। डीसीवाईए (डिफेंस साइबर एजेंसी) एवं आई4सी के माध्यम से समन्वय कर साइबर सुरक्षा के क्षेत्र में प्रयास हो रहा है ।देश को नशामुक्त बनाने हेतु व आतंकवाद जैसी समस्याओं के आय के प्रमुख स्त्रोत ड्रग्स के गैर कानूनी व्यापार पर करारा प्रहार करते हुए लगातार उनको जब्त किया जा रहा है। 2024 में ही 25,330 करोड़ रुपये के ड्रग्स की जब्ती इस बात का पुख्ता प्रमाण है।

सीमा सुरक्षा में महत्वपूर्ण योगदान सीमावर्ती गाँव में बसे ग्रामीणों का रहता है। उनके मन में अपने प्रति उपेक्षा भाव न रहे इसलिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 15 अगस्त 2023 में कहा, ये अंतिम गाँव नहीं, भारत माँ के प्रथम गाँव है। वीवीपी (वाइब्रेंट विलेजेज प्रोग्राम) फेज 1 -2 के अंतर्गत 4121 गाँवों के विकास के लिए लगभग 11639 करोड़ का बजट निर्धारित किया है जिसके द्वारा मौसम अनुकूल सड़क (ऑल-वेदर रोड), सौर उर्जा, मोबाइल कनेक्टिविटी, शिक्षा स्वास्थ्य एवं पर्यटन का ढांचा खड़ा किया जा रहा है। 2023 में लालकिला के मैदान में 600 सीमावर्ती गाँवों के सरपंचों की सहभागिता ने सीमा एवं दिल्ली का संगम कर दिया है।

अपने पंच प्रण के संकल्प में भारत को गुलामी की मानसिकता से मुक्ति का आह्वान भी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने किया था । इसका अनुपालन करते हुए ऑपनिवेशिक मानसिकता से मुक्ति एवं भारतीय स्वाभिमान में वृद्धि के अनेक प्रयास हुए हैं । आईपीसी, सीआरपीसी की धारायें अब भारतीय न्याय संहिता हो गई है। राजपथ अब कर्तव्यपथ, 7 रेस कोर्स रोड-7 लोक कल्याण मार्ग , प्रधानमंत्री कार्यालय - सेवा तीर्थ एवं राजभवन - लोकभवन हो गए हैं ।सीडीएस की नियुक्ति ने तीनों सेनाओं में समन्वय किया है । नेवी का प्रतीक चिन्ह अब ब्रिटिश दासता का स्मरण नहीं छत्रपति शिवाजी का स्मरण कराता, तिरंगे में अष्टकोणीय चिन्ह के साथ शिवाजी की राजमुद्रा से अंकित एवं वेद मंत्र शं नो वरुणः एवं अशोक स्तम्भ का स्मरण कराता है। गणतंत्र दिवस के पश्चात सेना द्वारा आयोजित बीटिंग रिट्रीट (बीटिंग रिट्रीट) परेड में अब अंग्रेजी धुन नही प्रसिद्ध गायिका स्वर्गीय लता मंगेशकर द्वारा रचित देशभक्ति गीत ए मेरे वतन के लोगो ने स्थान ले लिया है। सेना में महिला सहभागिता, सैनिक स्कूलों में वृद्धि एवं अग्निवीर योजना से सुरक्षा तंत्र में समाज की सहभागिता बढ़ेगी।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के ऐतिहासिक सुरक्षा के प्रति किए गए निर्णय सदैव स्मरण किए जाएंगे। राष्ट्र की संप्रभुता, आर्थिक विकास, शांति सभी के लिए सुरक्षा अनिवार्य शर्त है। सुरक्षा के प्रति किए गए उपायों का ही परिणाम है कि आज देश गरीब कल्याण, ढांचागत एवं आर्थिक विकास कर अपने सांस्कृतिक मूल्यों को संरक्षित करते हुए विश्व में अपना गौरवपूर्ण स्थान बना रहा है। भारत सुरक्षा के प्रति सजग रहते हुए 2047 तक विकसित भारत के अपने लक्ष्य प्राप्ति में सफल हो, यह सभी नागरिकों का संकल्प बनना चाहिए।

(लेखक राष्ट्रीय सह संगठन महामंत्री, भाजपा हैं)

अंतर्मन : छोटी चीजों से आनंद और सुख की प्राप्ति

संदीप

प्रेम, त्याग और समर्पण के सहारे भी संपूर्णता तथा आनंद की अनुभूति हो जाती है। महत्व केवल दृष्टि का है। हम देखना क्या चाहते हैं। अक्सर हमारे आम व्यवहार में यह सुनने को मिलता है-लीजिए यह मिठाई खाइए! नहीं-नहीं मन नहीं है! फिक्र चलते हैं। आज मन नहीं है! या आज बाहर जाकर खाने का खूब मन कर रहा है! गौर कीजियेगा, मन का अर्थ इच्छा से है। इच्छा, कामना, चाह यह सब मन ही हैं। ये नहीं तो मन भी नहीं है!! कामना ही कर्म की ओर प्रेरित करती है। कामनाएं असंख्य हो सकती हैं। देश, काल और परिस्थिति के अनुसार बदलती रहती हैं। स्वास्थ्य ठीक नहीं है तो बाहर जाकर खाने की कामना नहीं उठ सकती। कोई काम बिगड़ गया तो महफिल में जाने की चाह नहीं हो सकती!

इच्छाओं पर दृष्टि बनी रहे और सार्थक निरर्थक का भेद करना आ जाए, तो जीवन का कल्याण संभव है। अन्यथा, मनुष्य तो ताउम्र इनका गुलाम ही बना रहेगा। कामनाओं से मुक्ति यानी मन की समाप्ति। और यही दशा परम-मुक्ति की आधारशिला बन सकती है। जीते जी परम मुक्ति! मरने के बाद, इस जीवन के संग्रहणों या बाधाओं से तो मुक्ति सभी को मिल ही जाती है। यह कोई विशेष उपलब्धि नहीं हो सकती! कुछ बहुत मौलिक जरूरतों के बीच ही लालसाएं पैदा होती हैं। इन लालसाओं का कोई अंत नहीं होता! एक कामना- खूब पैसा हो यानी जमीन-

जायदाद, सोना-चांदी और बहुतायत में भोग सामग्री। दूसरी, नाम, सम्मान, प्रतिष्ठा की। ख्याति ऐसी हो कि बच्चे-बड़े सभी आदर की दृष्टि से देखें। घर में सुख-शांति हो, सभी प्रसन्न रहें यह तीसरी ख्वाइश! शरीर स्वस्थ रहे, निरोगी हों। इससे अधिक मानव क्या चाहता है? इन्हीं कामनाओं के छोटे या विकराल और वीभत्स रूप ही तो परिलक्षित होते हैं।

आत्मोपलब्धि का मार्ग भी मन के रास्ते होकर ही गुजरता है। संसार में रमणातीत मानव स्वभाव अधिकांशतः यह कामना करता ही नहीं। करता भी है तो आधी-अधूरी। क्योंकि बहुत गहरे तो सांसारिक भोग की लिप्तता और लगातार पाते रहने की आकांक्षा ही उसे सुहाती है। इसलिए, बिना मन के किए गए समस्त आध्यात्मिक प्रयास विफल हो जाते हैं! कई स्मार्ट लोग अध्यात्म को भी सांसारिक चाहतों की पूर्ति से ह्यलिंक कर देते हैं। नियमित पूजा-पाठ, सत्संग, मंदिर दर्शन, ध्यान और भक्ति को वे आत्मकल्याण के लिए नहीं, सांसारिक उपलब्धियों की प्राप्ति के उपक्रम की तरह इस्तेमाल करते हैं। धर्म का सहारा लेकर भी वे अपनी कमर्भूमि में अधार्मिक कार्यों में ही संलग्न रहते हैं। भ्रम यह रखते हैं कि अंत में दोनों समायोजित हो जाएंगे!

एक से अनेक हो जाने की एक तीव्र इच्छा से ईश्वर अनेक रूपों में अभिव्यक्त हो गए। बस, एक तीव्र इच्छा ही तो कुंजी है। धर्म के मार्ग पर चलने वाले श्रमण केवल एक ईमानदार और तीव्र इच्छा करें- आत्मोपलब्धी (परमात्मा प्राप्ति) की! शेष कार्य, यह इच्छा (मन) ही पूरा कर देगी। स्वयं को स्वयं से मिलाने का मार्ग मन ही निर्मित करता है। मजे की बात यह भी है कि यह मिलन करा देने के पश्चात मन विदा हो जाता है। मन की यह विदाई ही मुक्ति में परिवर्तित हो जाती है। मानव स्वभाव इच्छाओं के बारे में भी स्पष्ट नहीं है। उसे वाकई चाहिए क्या, इस पर ही वह भ्रमित है। दिखाता कुछ और है, लेकिन भीतर चाहतें कुछ अलग भूचाल मचाती हैं। संतुष्टि का स्वांग अवश्य करता है, लेकिन मरते दम तक कामनाओं के विकास में ही लगा रहता है। चाहतों की प्राथमिकता क्या हो, इतना भी ज्ञान नहीं, लेकिन समझता स्वयं को बड़ा बुद्धिमान है।

पहला सुख निरोगी काया। प्राथमिकता की फेहरिस्त में यह अव्वल स्थान पर हो। रोगी और अस्वस्थ शरीर आत्मोपलब्धी के मार्ग में बड़ी बाधा पैदा कर सकता है। हां, एक बार उपलब्ध होने के उपरांत शारीरिक दुर्बलता मायने नहीं रखती, क्योंकि तदोपरांत आप शरीर के तल से ऊपर उठकर आत्मा के तल पर जी रहे होते हैं। लेकिन इस भूमिका तक पहुंच पाने के लिए शारीरिक तप और श्रम चाहिए, जो दुर्बलता से संभव नहीं है। स्वस्थ शरीर संयम और समय दोनों मांगता है। भागमभाग भरी जिंदगी में ज्यादातर के लिए यह संभव नहीं हो पा रहा। संभव होना मुश्किल भी नहीं है, बस प्राथमिकता में नहीं है!

लोगों की दूसरी प्राथमिकता है वित्तीय सुरक्षा। यहां बड़ा भारी पेच है! इसकी पूर्ति कभी पूरी होती ही नहीं, और समय रीत जाता है। सौ वर्षों की आयु तक हद से हद कितने रुपयों की आवश्यकता हो सकती है, यह गणित लगानी है। यह उतना मुश्किल भी नहीं है! मोटा-मोटी इसकी आपूर्ति सुनिश्चित होने के उपरांत, मानव जीवन के अन्य बड़े उद्देश्यों में स्वयं को खपाना चाहिए। भक्ति, सेवा, साधना या आत्मोथान। कोई भी मार्ग, जिससे मैं यानी अहंकार के गलने की प्रक्रिया प्रारंभ हो सके!

बहुत छोटी-छोटी चीजों से आनंद और सुख की प्राप्ति हो जाती है। लेकिन, हमारी दृष्टि बड़ी चाहतों की आपूर्ति में लगी होने से छोटी खुशियों को लगभग नजरअंदाज कर देती हैं। चीजें ही क्यों, प्रेम, त्याग और समर्पण के सहारे भी संपूर्णता तथा आनंद की अनुभूति हो जाती है। महत्व केवल दृष्टि का है। हम देखना क्या चाहते हैं और महत्वपूर्ण आयामों को देखकर भी कितना अनदेखा कर जाते हैं! इच्छाओं के प्रति जागृति और कुछ महत्ती आध्यात्मिक इच्छाओं को पाने की भीतरी तड़प, बस इतना काफी है मन के लिए। हाथ पकड़ कर नैय्या पार करा देगा!

महिलाओं को ज्यादा झुलसाती है गर्मी की तपिश

मुकुल व्यास

बहुत ज्यादा गर्मी महिलाओं की सामाजिक दुनिया को बदल देती है। हीटवेव के दौरान कई उष्णकटिबंधीय जगहों पर औरतें घर के अंदर रहती हैं, जिससे उनके सामाजिक संपर्क कम हो जाते हैं। बांग्लादेश, कंबोडिया और नेपाल में तेज गर्मी को बाल विवाह में बढ़ोतरी से जोड़ा गया है। भीषण गर्मी आज एक बहुत बड़ी स्वास्थ्य समस्या है। दुनियाभर में हर साल लगभग 490,000 लोग गर्मी से अपनी जान गंवा देते हैं। लेकिन ये आंकड़े महिलाओं की रोजमर्रा की जिंदगी पर गर्मी के खतरनाक असर को नहीं दर्शाते।

एक नए अध्ययन ने एशिया, अफ्रीका और ओशिनिया के उदाहरणों के हवाले से बताया है कि महिलाओं को गर्मी के हालात में सबसे ज्यादा एडजस्ट करने के लिए मजबूर किया जाता है, लेकिन जलवायु संबंधी नीतियों में उन्हें सबसे ज्यादा नजरअंदाज किया जाता है। एशिया, अफ्रीका और ओशिनिया के कई हिस्सों में महिलाएं घर की मुख्य देखभाल करने वाली होती हैं। वे अक्सर पुरुषों के मुकाबले घर के अंदर ज्यादा समय बिताती हैं। उन्हें कम हवादार घरों में बिना इंसुलेशन या कूलिंग के रहना पड़ता है, जिससे उन्हें शारीरिक और मानसिक तनाव होता है। इससे पता चलता है कि बहुत ज्यादा गर्मी महिलाओं की सेहत को कैसे नुकसान पहुंचाती है।

काम की जगहों पर लिंग के आधार पर भेदभाव भी गर्मी के संपर्क को प्रभावित करता है। एक रिसर्च से पता चलता है कि अनौपचारिक काम की जगहों पर साफ-सफाई की कमी महिलाओं को बहुत ज्यादा गर्मी के दौरान खास तौर पर परेशान करती है। कुछ महिलाएं गंदे टॉयलेट इस्तेमाल करने से बचने के लिए कम पानी पीती हैं, जिससे उनमें डिहाइड्रेशन और सेहत से जुड़ी और दूसरी समस्याएं उत्पन हो जाती हैं। ये छोटी-मोटी परेशानियां नहीं हैं। ये सब मिलकर महिलाओं के गर्मी के संपर्क में निरंतर इजाफा करती हैं।

बहुत ज्यादा गर्मी महिलाओं की सामाजिक दुनिया को बदल देती है। हीटवेव के दौरान कई उष्णकटिबंधीय जगहों पर औरतें घर के अंदर रहती हैं, जिससे उनके सामाजिक संपर्क कम हो जाते हैं। बांग्लादेश, कंबोडिया और नेपाल में तेज गर्मी को बाल विवाह में बढ़ोतरी से जोड़ा गया है, क्योंकि मुश्किल में फंसे परिवार पैसे का तनाव कम करने और घर का खर्च कम करने के लिए अपनी बेटियों को शादी के लिए मजबूर करते हैं।

एक अन्य अध्ययन के अनुसार दुनिया के कई हिस्सों में परिवार ऐसे घरों में रहते हैं जो गर्मी को अंदर रोककर रखते हैं, जहां बिजली की भरोसेमंद सुविधा नहीं है और साफ पानी की उपलब्धता सीमित है। बहुत से लोग आज भी चिलचिलाती धूप में बाहर काम करते हैं। जैसे-जैसे जलवायु परिवर्तन के कारण तापमान बढ़ रहा है, इस तरह के हालात सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए एक गंभीर संकट पैदा कर रहे हैं। नेचर सस्टेनेबिलिटी में छपी एक नई स्टडी में बताया गया है कि दुनिया में अरबों लोग ह्यकूलिंग पॉवर्टीह्व (ठंडक की कमी) का सामना कर रहे हैं। शोधकर्ताओं का अनुमान है कि दो अरब से ज्यादा लोग ऐसी स्थिति में रहते हैं जिसे वे कूलिंग पॉवर्टी कहते हैं। यानी वे खतरनाक गर्मी का सामना करते हैं और उनके पास ठंडक पाने के सुरक्षित या सस्ते तरीके नहीं होते।

ये नतीजे ऐसे समय में आए हैं जब दक्षिण एशिया के कुछ हिस्सों में इन गमिर्यों में तापमान 45 डिग्री सेल्सियस से ऊपर पहुंच गया। इतनी ज्यादा गर्मी ये जरूरी सवाल खड़े करती है कि सबसे ज्यादा खतरे में कौन है और उनकी सुरक्षा के लिए क्या किया जा सकता है। आमतौर पर लोग मान लेते हैं कि इन लोगों को बस एक एयर कंडीशनर की जरूरत है। शोधकर्ता इस सोच को बदलना चाहते हैं। यूरो-मेडिटेरेनियन सेंटर ऑन क्लाइमेट चेंज के वैज्ञानिक जियाकोमो फाल्चेटा ने कहा, कूलिंग पॉवर्टी का मतलब ऐसे हालात से है जहां लोगों को ताप सुरक्षा नहीं मिल पाती और इसकी वजह सिर्फ यह नहीं है कि उनके पास एयर कंडीशनर नहीं है।

वैसे भी, एयर कंडीशनर बांटने से कोई लाभ नहीं होगा। वे बहुत ज्यादा बिजली की खपत करते हैं और कमजोर पावर ग्रिड पर बोझ डालते हैं। हम इस संकट से निपटने के लिए सिर्फ एयर कंडीशनर का सहारा नहीं ले सकते। गरीबी गर्मी के असर को और बढ़ा देती है। स्टडी से पता चलता है कि गर्मी गरीबी, खराब घरों और कमजोर सार्वजनिक सेवाओं के साथ मिलकर नुकसान पहुंचाती है। पहला खतरा तो घर ही है। कमजोर बनावट वाला घर आपको गर्मी से नहीं बचाता; बल्कि वह गर्मी को अंदर ही रोककर रखता है।

शहरों में रहने वाले लाखों गरीब लोग टिन या एस्बेस्टस की छतों के नीचे रहते हैं, जिससे घर के अंदर का तापमान बाहर की हवा के मुकाबले पांच डिग्री तक ज्यादा हो सकता है। जब बिजली बार-बार जाती है और पानी सुरक्षित नहीं होता, तो पर्याप्त पानी पीना और शरीर को ठंडा रखना भी मुश्किल हो जाता है। दूसरा खतरा सेहत से जुड़ा है। जब भीषण गर्मी शरीर की सहनशक्ति से बाहर हो जाती है,तो जान बचाने के लिए अक्सर तुरंत मदद की जरूरत होती है।

जिन देशों में क्लिनिक कम हैं या दूर हैं, वहां गर्मी से होने वाली बीमारी जानलेवा साबित हो सकती है। तीसरा खतरा काम से जुड़ा है। किसान, निर्माण कार्य करने वाले और सड़क किनारे सामान बेचने वाले लोग घंटों तक खुली धूप में काम करते हैं और वे किसी ठंडे कमरे में नहीं जा सकते। उनके शरीर को भी मुश्किलों का सामना करना पड़ता है,क्योंकि यह गर्मी ज्यादातर नमी वाली होती है, जिससे पसीना त्वचा को ठंडा नहीं कर पाता। इन मुश्किलों का असर सब पर एक जैसा नहीं होता।

महिलाएं, बच्चे, बुजुर्ग और सबसे गरीब परिवार सबसे ज्यादा प्रभावित होते हैं। अक्सर यही लोग खराब घरों में रहते हैं। उन्हें स्वास्थ्य सेवा और जानकारी नहीं मिल पाती, और खुद को बचाने के लिए उनके पास कोई अतिरिक्त साधन नहीं होता। अगर समुदायों के पास गर्मी से निपटने के साधन हों, तो इसके असर को कम किया जा सकता है। अच्छी बात यह है कि आसान और कम खर्चीले उपाय भी कारगर होते हैं। छतों को सफेद रंगने से कमरे का तापमान कई डिग्री कम हो सकता है। पुआल और मिट्टी से सस्ता इंसुलेशन (तापमान रोकने वाली परत) बनाया जा सकता है। पेड़ लगाने, तालाबों और पार्कों को ठीक करने और निःशुल्क पानी की सुविधा वाले सार्वजनिक शेल्टर खोलने जैसे उपायों से पूरे इलाके को बिना किसी एयर कंडीशनर के ठंडा रखने में मदद मिलती है।

निःसंदेह, तेजी से गर्म होती दुनिया में ढालने के लिए सरकारों, संस्थाओं और लोगों को मिलकर कोशिश करनी पड़ेगी। छतों पर सफेद पेंट को बड़े पैमाने पर प्रोत्साहित किया जाना चाहिए क्योंकि सफेद पेंट सूरज की अधिकांश रोशनी को परावर्तित करके कमरों को ठंडा रखता है। सरकार को इसके लिए विशेष जन अभियान चलाना चाहिए। चूंकि गर्मी महिलाएं और पुरुषों को अलग-अलग ढंग से प्रभावित करती है, नीति-निर्धारकों को इस अंतर का भी ध्यान रखना पड़ेगा।

बढ़ती विषमता का आईना

आय कर रिटर्न्स से उभरा रुझान साफ है। भारत में प्रत्यक्ष कर राजस्व अधिक से अधिक धनी वर्गों पर निर्भर होता जा रहा है। वैसे, विषमता बढ़ने की पुष्टि हवाई यात्रा संबंधी ताजा आंकड़ों से भी हुई है।

वित्त वर्ष 2025-26 के लिए दाखिल हुए आयकर रिटर्न्स से देश में बढ़ रही आर्थिक गैर-बराबरी की झलक मिली है। एक अंग्रेजी वित्तीय अखबार के विश्लेषण के मुताबिक पांच लाख रुपये तक आमदनी वाले व्यक्तियों के रिटर्न की संख्या 2024-25 की तुलना में गिर कर लगभग आधी रह गई है। ऐसा संभवतः इसलिए हुआ कि गुजरे वित्त वर्ष में सरकार के आय कर दरों में बढ़ोतरी करने की वजह से बहुत से लोगों के लिए रिटर्न फाइल करने की अनिवार्यता नहीं रह गई। मगर इससे यह भी जाहिर होता है कि लोगों के क्रमिक रूप से ऊपर के आय वर्ग में शामिल होने का क्रम टूटा हुआ है।

2019-20 के बाद से 2022-25 तक पांच लाख से कम आबादी वाले वर्ग की ओर से सबसे ज्यादा रिटर्न फाइल होते थे। मगर अब पांच से दस लाख रुपये के बीच की आमदनी वाले समूह ने यह स्थान हासिल कर लिया है। 2024-25 में इस आय वर्ग में चार करोड़ 75 लाख रिटर्न फाइल हुए थे, जो पिछले वर्ष पांच करोड़ 45 लाख तक पहुंच गए। रुझान साफ है। भारत में प्रत्यक्ष कर राजस्व अधिक से अधिक धनी वर्गों पर निर्भर होता जा रहा है। वैसे, विषमता बढ़ने की पुष्टि हवाई यात्रा संबंधी ताजा आंकड़ों से भी हुई है।

2011-12 में हर दस लाख आबादी पर 649 परिवारों के 775 लोगों ने हवाई यात्रा की थी। तब कुल छह करोड़ 80 लाख हवाई यात्राएं हुईं। 2023-24 में हवाई यात्राओं की संख्या 15 करोड़ 37 लाख तक पहुंच गई। लेकिन ये यात्राएं हर दस लाख आबादी में 471 लोगों ने की, जो 469 परिवारों से आए। मतलब यह कि 2011 में हवाई यात्राओं की संख्या भले कम थी, मगर आबादी के हिसाब से यात्रियों का अनुपात कहीं बड़ा था। महंगी कारों एवं अन्य उपभोक्ता चीजों की खरीदारी के आंकड़ों से भी इसी रुझान का संकेत मिलता है। इसीलिए सरकार के विषमता घटने के दावों पर यकीन करना मुश्किल होता गया है। मसलन, पारिवारिक उपभोग खर्च सर्वे रिपोर्ट- 2023-24 में ऐसा दावा किया गया। जबकि आय एवं व्यय के अन्य आंकड़े कुछ और कहानी बताते हैं।

सात-सूत्री अपील

सवा दो महीनों तक आर्थिक मजबूती का गैर-जरूरी दिखावा करने के बाद आखिरकार अब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने चुनौतीपूर्ण वैश्विक परिस्थितियों का मुकाबला करने के लिए सात-सूत्री अपील भारतवासियों से की है।

तो आखिर ये नौबत आ पहुंची। प्रधानमंत्री को डॉलर और तेल- गैस बचाने के लिए आम नागरिकों से अपील करनी पड़ी है। सवा दो महीनों तक आर्थिक मजबूती का गैर-जरूरी दिखावा करने (मुमकिन है जारी चुनाव के कारण किया गया हो) के बाद अब नरेंद्र मोदी ने चुनौतीपूर्ण वैश्विक परिस्थितियों का मुकाबला करने के लिए सात-सूत्री अपील भारतवासियों से की है। कहा है कि ऊर्जा बचाने के लिए उन्हें वर्क फ्रॉम होम को तरजीह देनी चाहिए, सार्वजनिक परिवहन का उपयोग कर पेट्रोल- डीजल की खपत घटानी चाहिए, और रसोई ईंधन के इस्तेमाल में कटौती करनी चाहिए। विदेशी मुद्रा खर्च ना हो, इसके लिए साल भर उन्हें सोना नहीं खरीदना चाहिए, स्वदेशी उत्पादों का ज्यादा इस्तेमाल करना चाहिए, और विदेश यात्रा से बचना चाहिए।

साथ ही रासायनिक उर्वरकों का इस्तेमाल घटाने के लिए कुदरती खेती की ओर जाना चाहिए। ये बातें ऊर्जा, डॉलर, और उर्वरकों की संभावित किल्लत की ओर इशारा करती हैं। ईरान युद्ध ने विश्व ऊर्जा बाजार के स्वरूप को फिलहाल बदल दिया है। इसकी मार उन तमाम देशों पर पड़ी है, जिनके पास अपना ऊर्जा स्रोत नहीं है और अच्छे दौर में रणनीतिक भंडार बना लेने की बात जिनके दिमाग में नहीं आई। फिलहाल, बाजार में कच्चा तेल उपलब्ध है, लेकिन उसके लिए (फरवरी की तुलना में) सवा से डेढ़ गुनी ज्यादा कीमत चुकानी पड़ रही है। इससे विदेशी मुद्रा भंडार पर दबाव तेजी से बढ़ा है।

इसी बीच विदेशी निवेशकों की भारत से पैसा निकालने के तेज होती गई रफ्तार और रुपये की कीमत में आई भारी गिरावट ने संकट और बढ़ा दिया है। उधर पश्चिम एशिया से घटे आयात के कारण उर्वरक में इस्तेमाल होने वाले केमिकल्स का अभाव हो गया है, जिससे खाद्य संकट की आशंकाएं गहराई हैं। ऐसे में कई देश पहले ही ऊर्जा एवं डॉलर बचाने के उपाय अपना चुके हैं। मगर भारत में बात तब शुरू हुई है, जब पानी सिर तक पहुंच गया है। तब भी बात सिर्फ नागरिकों तक है। जो भारतीय कंपनियां अरबों डॉलर का अमेरिका में कर रही हैं, उनमें देशभक्ति की भावना जगाने का आह्वान अभी नहीं किया गया है।

सेवा, साहस और समर्पण की कहानी है भारत भाग्य विधाता : मुख्यमंत्री साय

26/11 के अनसुने नायकों को सलाम : मुख्यमंत्री साय भारत भाग्य विधाता की प्री-लॉन्च स्क्रीनिंग में हुए शामिल

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय राजधानी रायपुर के जोरा मॉल में आयोजित भारत भाग्य विधाता फिल्म की प्री-लॉन्च स्क्रीनिंग सेरेमनी में शामिल हुए। इस अवसर पर उनकी धर्मपत्नी श्रीमती कौशल्या साय एवं परिजन भी उपस्थित थे। कार्यक्रम में प्रख्यात अभिनेत्री एवं सांसद सुश्री कंगना रनौत, फिल्म के निर्देशक मनोज तापड़िया सहित फिल्म जगत से जुड़े कलाकार, जनप्रतिनिधि और बड़ी संख्या में आमजन उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि यह छत्तीसगढ़ के लिए बड़े सौभाग्य का विषय है कि सुश्री कंगना रनौत की फिल्म भारत भाग्य विधाता की स्क्रीनिंग प्रदेश में आयोजित हो रही है और इस अवसर पर वे स्वयं यहां पधारी हैं। उन्होंने कहा कि माता कौशल्या की जन्मभूमि और भगवान श्रीराम के ननिहाल छत्तीसगढ़ में सुश्री कंगना रनौत का हार्दिक स्वागत और अभिनंदन है। मुख्यमंत्री श्री साय ने फिल्म से जुड़े सभी कलाकारों, तकनीकी विशेषज्ञों और पूरी टीम को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि यह एक ऐसी कहानी है, जो उन अनसुने और अनदेखे नायकों को सम्मान देती है, जिनके असाधारण योगदान को अक्सर पर्याप्त पहचान नहीं मिल पाती। उन्होंने कहा कि आज इस स्क्रीनिंग में सुश्री कंगना रनौत और उनकी टीम के साथ स्वास्थ्य विभाग की बहनों की उपस्थिति इस फिल्म की भावना को और अधिक सार्थक बनाती है।

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि यह गर्व की बात है कि फिल्म के निर्देशक मनोज तापड़िया छत्तीसगढ़ की माटी के पुत्र हैं। उन्होंने यहां जन्म लिया, यहीं पले-बढ़े और लंबे समय तक मुंबई में रहकर इस महत्वपूर्ण विषय पर आधारित फिल्म की कहानी लिखी। मुख्यमंत्री ने कहा कि 26 नवंबर 2008 को मुंबई में हुए आतंकी हमले में पाकिस्तानी आतंकवादियों द्वारा निर्दोष लोगों पर अंधाधुंध गोलीबारी की गई, जिसमें अनेक लोगों की जान गई। उस कठिन समय में अस्पतालों में कार्यरत महिला नर्सों, डॉक्टरों और अन्य स्वास्थ्यकर्मियों ने अपने प्राणों की परवाह किए बिना सैकड़ों लोगों की जान बचाई और घायलों की सेवा की।

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि ऐसे अनेक योद्धा होते हैं, जिनकी कहानियां समाज के सामने नहीं आ पातीं। सुश्री कंगना रनौत ने स्वयं नर्स की भूमिका निभाकर उन स्वास्थ्यकर्मियों के साहस, सेवा और समर्पण की कहानी देश के सामने लाने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। उन्होंने कहा कि दुनिया में कई ऐसे लोग होते हैं, जो बड़े कार्य कर जाते हैं, लेकिन उन्हें उचित पहचान नहीं मिल पाती। यह फिल्म ऐसे ही लोगों को समर्पित है। मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि यह भी अत्यंत सौभाग्य का विषय है कि देश के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस फिल्म को भारत भाग्य विधाता नाम प्रदान किया है। उन्होंने छत्तीसगढ़ की जनता की ओर से सुश्री कंगना रनौत, उनकी पूरी टीम और स्वास्थ्य विभाग से जुड़े सभी कर्मियों को बधाई एवं शुभकामनाएं दीं।

इस अवसर पर अभिनेत्री एवं सांसद सुश्री कंगना रनौत ने कहा कि फिल्म के निर्देशक मनोज तापड़िया छत्तीसगढ़ की धरती पर जन्मे हैं, यहीं पले-बढ़े हैं और इस प्रदेश के बेटे हैं। उन्होंने आग्रह किया था कि यदि फिल्म की स्क्रीनिंग छत्तीसगढ़ में आयोजित की जाए तो यह उनके लिए गर्व का विषय होगा। सुश्री रनौत ने कहा कि मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने अपने व्यस्ततम कार्यक्रमों के बीच समय निकालकर इस आयोजन में शामिल होकर कलाकारों और पूरी टीम का सम्मान बढ़ाया है तथा सभी का उत्साहवर्धन किया है।

कार्यक्रम के दौरान मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने छत्तीसगढ़ में आपातकालीन परिस्थितियों में उत्कृष्ट सेवाएं प्रदान करने वाले भारत भाग्य विधाता वॉरियर्स को सम्मानित किया। सम्मानित होने वालों में जागेश्वर कुमार धीवर, नारायण सिंह नायक, श्रीमती भुनेश्वरी तिवारी, श्रीमती रोहिणी वर्मा, श्रीमती उमिर्ला भगत, श्रीमती रोशनी, विजय शंकर कश्यप, श्रीमती मीना सिंह, श्रीमती ममता कपूर, श्रीमती मीना शर्मा, श्रीमती जमुनाबाई, श्रीमती लक्ष्मी मेनन तथा श्रीमती विजया लक्ष्मी पिल्लई शामिल हैं। इस अवसर पर मंत्रिमंडल के सदस्य, सांसद बृजमोहन अग्रवाल, सांसद श्रीमती लक्ष्मी वर्मा, सांसद श्रीमती रूप कुमारी चौधरी, विधायकगण, जनप्रतिनिधि, फिल्म जगत से जुड़े कलाकार तथा मीडिया प्रतिनिधि उपस्थित थे।

खास खबर

मुख्यमंत्री के हाथों मेधावी छात्रा को मिली 2 लाख रुपये की सहायता

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

उत्तर बस्तर कांकेर जिले की मेधावी छात्रा महेश्वरी कोर्राम को कक्षा 12वीं की बोर्ड परीक्षा में 96.40 प्रतिशत अंक प्राप्त कर माध्यमिक शिक्षा मंडल की टॉप-10 सूची में दसवां स्थान हासिल करने पर राज्य शासन की ओर से विशेष प्रोत्साहन दिया गया। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने रायपुर में आयोजित कार्यक्रम में छात्रा को मुख्यमंत्री नोनी बाबू मेधावी शिक्षा सहायता योजना के अंतर्गत 01 लाख रुपये तथा दोपहिया वाहन (स्कूटी) अनुदान के लिए 01 लाख रुपये की सहायता राशि प्रदान की।

श्रम पदाधिकारी ने बताया कि जिले के चारामा विकासखण्ड के ग्राम कानापोड़ निवासी छात्रा महेश्वरी कोर्राम की माता श्रीमती अनिता कोर्राम श्रमिक हैं तथा श्रम विभाग के अंतर्गत भवन एवं अन्य सन्निर्माण कमर्कार कल्याण मंडल में पंजीकृत श्रमिक है। इसी पात्रता के आधार पर श्रम विभाग द्वारा संचालित मुख्यमंत्री नोनी बाबू मेधावी शिक्षा सहायता योजना के तहत यह सहायता राशि स्वीकृत की गई। इस अवसर पर मुख्यमंत्री के साथ श्रम मंत्री लखनलाल देवांगन बोर्ड के अध्यक्ष डा रामप्रताप सिंह श्रमायुक्त, हिमशिखर गुप्ता मंडल के सचिव गिरीश रामटेके तथा श्रम विभाग के अन्य अधिकारी एवं कमर्चारी उपस्थित रहे।

कृषि विभाग की कार्रवाई, अवैध उर्वरक भंडारण के मामले में 3.87 टन यूरिया जब्त

रायपुर। सक्ती जिले के किसानों को निर्धारित दर पर गुणवत्तायुक्त उर्वरक उपलब्ध कराने के लिए प्रशासन ने अवैध भंडारण के खिलाफ सख्त रुख अपनाया है। कृषि विभाग की टीम ने ग्राम केसला में कार्रवाई करते हुए 3.87 टन (86 बोरी) यूरिया उर्वरक जब्त कर उसके विक्रय पर तत्काल रोक लगा दी। प्राप्त शिकायत के आधार पर जिला एवं विकासखंड स्तरीय निगरानी दल ने विकासखंड सक्ती के ग्राम केसला में एक निजी भवन का निरीक्षण किया। जांच के दौरान वहां बड़ी मात्रा में उर्वरक भंडारित पाया गया। पड़ताल में यह उर्वरक मेसर्स मयंक ट्रेडर्स की प्रोपराइटर श्रीमती उमा राठौर द्वारा भंडारित कराया जाना पाया गया। कार्रवाई के समय फर्म प्रतिनिधि की मौजूदगी में उर्वरक जब्त कर उसे सुपुदर्गी में रखा गया। कृषि विभाग के अनुसार जिले में उर्वरकों की कालाबाजारी और अनियमित भंडारण रोकने के लिए लगातार निरीक्षण अभियान चलाया जा रहा है। विभागीय आंकड़ों के मुताबिक अब तक सक्ती, डभरा और जैजैपुर विकासखंडों में ऐसे सात मामलों में कार्रवाई की जा चुकी है। कृषि विभाग ने किसानों से भी अपील की है कि यदि कहीं उर्वरकों की कालाबाजारी, अधिक मूल्य वसूली या अवैध भंडारण की जानकारी मिले तो इसकी सूचना तत्काल निकटतम कृषि कार्यालय को दें, ताकि दोषियों के विरुद्ध समय पर कार्रवाई सुनिश्चित की जा सके।

ईमानदारी और मेहनत साहू समाज की पहचान, इसे बनाकर रखें - उपमुख्यमंत्री अरुण साव

उप मुख्यमंत्री कर्मा महोत्सव में हुए शामिल, तैलीय सदन का किया लोकार्पण

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

उप मुख्यमंत्री अरुण साव किरंदुल में तहसील साहू संघ द्वारा आयोजित कर्मा महोत्सव, नवीन सामाजिक भवन नामकरण एवं लोकार्पण समारोह में शामिल हुए। उन्होंने सामाजिक पदाधिकारियों के साथ एक करोड़ रुपए की लागत से निर्मित भव्य तैलीय सदन का लोकार्पण किया। छत्तीसगढ़ तेलघानी बोर्ड के अध्यक्ष जितेन्द्र साहू, दंतेवाड़ा के विधायक चौतराम अटामी और किरंदुल नगर पालिका की अध्यक्ष श्रीमती रुबी शैलेन्द्र सिंह भी महोत्सव में शामिल हुईं।

श्री साव ने कर्मा महोत्सव को संबोधित करते हुए कहा कि किरंदुल में छत्तीसगढ़ का सबसे भव्य साहू समाज का भवन बना है। इस भवन का रोज उपयोग हो, ऐसी व्यवस्था बनाएं। उन्होंने कहा कि ईमानदारी और मेहनत साहू समाज की ताकत और विशेषता है। हमारी इस पहचान को बनाकर रखना है। उन्होंने कहा कि सभी समाजों के साथ साहू समाज का आत्मीय संबंध है। यह सभी के साथ मिलकर चलने वाला समाज है। साहू समाज हर क्षेत्र में आगे बढ़ रहा है। देश-विदेश में समाज के युवा अनेक क्षेत्रों में काम कर रहे हैं। भक्त माता कर्मा के बताए मार्ग पर चलकर हमें समाज को ऊंचाईयों पर पहुंचाना है।

छत्तीसगढ़ तेलघानी बोर्ड के अध्यक्ष जितेन्द्र साहू ने अपने संबोधन में कहा कि साहू समाज का तेल निकालने का पुश्तैनी काम रहा है। हमारे इस पुश्तैनी व्यवसाय को पुनर्स्थापित करना चाहिए। उन्होंने समाज के लोगों को तेल निकालने की मशीन लगाने के लिए प्रेरित करते हुए कहा कि तेल निकालने की मशीनों पर सरकार द्वारा 35 प्रतिशत की सब्सिडी दी जाती है। समाज के लोग इसका लाभ लेकर तेल निकालने का उद्यम कर आत्मनिर्भर बन सकते हैं।

विधायक चौतराम अटामी ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि साहू समाज के लोग किरंदुल में सक्रियता से काम कर रहे हैं। समाज के 300 परिवार यहां रहते हैं। उन्होंने समाज की मांग पर शैक्षणिक कार्य के लिए कमरा बनाने की घोषणा की। किरंदुल नगर पालिका की अध्यक्ष श्रीमती रुबी शैलेन्द्र सिंह, किरंदुल तहसील साहू समाज के अध्यक्ष टीकमचंद साहू और छत्तीसगढ़ साहू समाज के संगठन सचिव ओमप्रकाश साहू ने भी कर्मा महोत्सव को संबोधित किया।

कार्यक्रम में उत्कृष्ट सामाजिक कार्यों के लिए लालाराम साहू को समाजरत्न सम्मान दिया गया। माता कर्मा प्रांगण में दीवारों कर कलाकृति बनाने वाले कलाकार कामता राम कोर्राम को भी सम्मानित किया गया। भगवताचार्य श्रीमती यामिनी देवी साहू, लोक गायिका सुश्री आरू साहू, पार्षद विनोद साहू और तहसील साहू समाज के संरक्षक ओम साहू सहित साहू समाज के प्रदेशभर के पदाधिकारी और गणमान्य नागरिक बड़ी संख्या में कार्यक्रम में मौजूद थे।

लिटिया-समेरिया में शिव महापुराण कथा : आचार्य विक्रांत दुबे का संदेश "बेटी यश बढ़ाने आती है"

नई दृष्टिबिंदु / लिटिया-सेमरिया

ग्राम लिटिया सेमरिया में चल रही शिव महापुराण कथा के चौथे दिन भक्ति का माहौल रहा। कथावाचक आचार्य डॉ. विक्रांत दुबे ने माता पावर्ती के जन्म, तपस्या और शिव विवाह प्रसंग का मार्मिक वर्णन किया। सैकड़ों श्रद्धालु कथा सुनकर मंत्रमुग्ध हो गए।

सनकादिक ऋषियों के श्राप का प्रसंग : आचार्य विक्रांत दुबे ने बताया कि प्राचीन काल में पितरों की कन्याओं को सनकादिक ऋषियों ने श्राप दिया था। इसके कारण उन्हें पृथ्वी पर मनुष्य रूप में जन्म लेना पड़ा। एक कन्या हिमाचल की पत्नी मैना, दूसरी राजा जनक की पत्नी सुनैना और तीसरी राधा की माता कीर्ति के रूप में अवतरित हुईं। आदिशक्ति ने इन्हीं के यहां जन्म लेकर धर्म की स्थापना की।

शिव विवाह की भव्य झांकी निकली : कथा में माता पावर्ती की कठोर तपस्या का वर्णन सुनकर श्रद्धालु भावविभोर हो उठे। पूरा पंडाल "हर-हर महादेव" के जयघोष से गूंज उठा। कथा के बाद शिव विवाह की भव्य झांकी प्रस्तुत की गई। भजनों की धुन पर निकली भोले बाबा की बारात में श्रद्धालु झूमते-गाते नजर आए।

बेटी घर से देने आती है, लेने नहीं : आचार्य विक्रांत दुबे ने कहा कि भगवान शंकर का जीवन ज्ञान, विवेक, त्याग और संस्कारों की प्रेरणा देता है। शिव केवल देव नहीं, जीवन जीने की श्रेष्ठ पद्धति हैं। उन्होंने कहा कि बेटी घर से कुछ लेने नहीं, बल्कि देने आती है। अच्छे संस्कार पाकर बेटी ससुराल में माता-पिता का यश बढ़ाती है। यह यश करोड़ों रुपए से भी नहीं खरीदा जा सकता।

उन्होंने समाज की उस सोच पर सवाल उठाया जिसमें बेटे को धन लाने वाला और बेटी को दहेज देने वाली माना जाता है। तुलसीदास की चौपाई का उल्लेख करते हुए कहा कि जब बेटी सेवा और प्रेम से घर संवारती है तो माता-पिता का नाम समाज में उजागर होता है। कथा का आयोजन शकुंतला ओमप्रकाश शर्मा, पवन शर्मा जिला पंचायत उपाध्यक्ष एवं शर्मा परिवार कर रहा है। सैकड़ों ग्रामवासी कथा में शामिल हो रहे हैं।

महात्मा गांधी कला मंदिर में एक शाम बशीर बद्र के नाम ग़जल संध्या, पद्मश्री बशीर बद्र की स्मृति में सजे सुर, श्रोता हुए भावविभोर

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

सेल-भिलाई इस्पात संयंत्र के क्रीड़ा, सांस्कृतिक एवं नागरिक सुविधाएं विभाग ने 06 जून को महात्मा गांधी कला मंदिर में पद्मश्री स्वर्गीय डॉ. बशीर बद्र की स्मृति में एक शाम बशीर बद्र के नाम ग़जल संध्या का आयोजन किया।

कार्यपालक निदेशक ने पेश की ग़जल : कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कार्यपालक निदेशक मानव संसाधन पवन कुमार और विशिष्ट अतिथि कार्यपालक निदेशक रावघाट अरुण कुमार थे। सेल के भूतपूर्व निदेशक कार्मिक गणतंत्र ओझा विशेष अतिथि के रूप में मौजूद रहे। मुख्य अतिथि पवन कुमार ने बशीर बद्र की चर्चित ग़जल "यूँ ही बेसबब न फिरा करो, कोई शाम घर में रहा करो" अपने अंदाज में पेश की, जिसे श्रोताओं ने खूब सराहा।

साधना रहाटगांवकर की मुख्य प्रस्तुति : ग़जल संध्या की शुरुआत युवा गायक परन राज भाटिया ने की। इसके बाद अंतरराष्ट्रीय भजन और ग़जल गायक प्रभंजय चतुर्वेदी ने "कभी यूँ भी आ मेरी आँख में" समेत कई रचनाएं पेश कर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध किया। मुख्य प्रस्तुति सुप्रसिद्ध ग़जल गायिका डॉ. साधना रहाटगांवकर ने दी। उन्होंने बशीर बद्र की कालजयी ग़जलों से सभागार को भावविभोर कर दिया।

खैरागढ़-भिलाई के कलाकारों की संगत : संगत में तबले पर अवध सिंह ठाकुर, भालचंद्र शेगेकर और रामचंद्र सर्पे, सारंगी पर शफीक हुसैन, बांसुरी पर बिहारी तारम और की-बोर्ड पर साई चक्रवर्ती ने साथ दिया। संचालन सुप्रियो सेन ने किया।

कार्यक्रम में अधिकारी संघ अध्यक्ष नरेंद्र बंछोर, उप महाप्रबंधक एवं ओलंपियन राजेंद्र प्रसाद, पी. टी. उल्लास कुमार, दुष्यंत हरमुख, दीपेन हलदार, रवीन्द्र कमर्कार, संदीप बोकीलवार, रवीश कालगांवकर, स्वाति देशपांडे समेत बड़ी संख्या में साहित्य और संगीत प्रेमी मौजूद रहे। यह आयोजन बशीर बद्र को श्रद्धांजलि के साथ भिलाई की सांस्कृतिक परंपरा को नई ऊर्जा देने वाला रहा।

न्यायालय अतिरिक्त तहसीलदार भिलाई नगर, तहसील व जिला दुर्ग

-:: ईश्तहार ::-

इस न्यायालय का रा.प्र.क्रं. .../अ-6 वर्ष 2025-26 आवेदिका / आवेदक - किरण बंसोड आ./ध.प. सुनील बंसोड निवासी- नवागांव, बजरंगपुर राजनांदगांव तह. व जिला राजनांदगांव द्वारा ग्राम कोहका प.ह.न. 45 रा.नि.मं. कोहका व जिला दुर्ग स्थित भूमि स्वामी हक की भूमि खसरा नं. 1305 रकबा 0.090 हे. है। जो भूमि स्वामी दुलारी बाई पति स्व. तेजराम के नाम पर दर्ज है। जिसमें भूमिस्वामी दुलारी बाई पति स्व. तेजराम की मृत्यु दिनांक 04/02/2005 को फौत हो जाने के कारण मृतक का नाम खाते से विलोपित कर उसके वैध वारिसानों का नाम दर्ज किये जाने हेतु आवेदन पत्र प्रस्तुत किया गया है।

अतः उपरोक्त भूमि फौती नामांतरण किये जाने पर जिस किसी भी व्यक्ति को आपत्ति या उजर दावा हो तो सुनवाई तिथि दिनांक 18/06/2026 तक या उसके पूर्व स्वयं या अपने मान्य अधिवक्तागण के साथ उपस्थित होकर अपना आपत्ति प्रस्तुत कर सकते है। निर्धारित तिथि के बाद प्राप्त आवेदन पत्र पर कोई विचार नहीं किया जावेगा।

आज दिनांक 27/05/2026 को मेरे स्वयं के हस्ताक्षर एवं न्यायालय के मुहर से जारी किया गया है।

अतिरिक्त तहसीलदार
भिलाई नगर

न्यायालय अतिरिक्त तहसीलदार भिलाई नगर, तहसील व जिला दुर्ग

-:: ईश्तहार ::-

इस न्यायालय का रा.प्र.क्रं. 202605101000083/ब-121 वर्ष 2025-26 आवेदिका / आवेदक - संजय कुमार जुल्मे आ./ध.प. श्रीराम जुल्मे निवासी- प्लाट नं. 15 आनंद विहार कालोनी द्वारा ग्राम कोहका प.ह.न. 45 रा.नि.मं. कोहका तह. दुर्ग जिला दुर्ग स्थित भूमि खसरा नं. 2582/57 रकबा 3000 वर्गफीट हे भूमि आवेदक के नाम पर दर्ज है। का आवासीय प्रयोजनार्थ पुननिर्धरण आदेश पारित किया गया है, जो वर्तमान में कृषि भूमि दर्ज है। जिसे ऑनलाईन राजस्व अभिलेख में परिवर्तित भूमि दर्ज किये जाने हेतु आवेदनमय दस्तावेज प्रस्तुत किया गया है।

अतः जिस किसी भी व्यक्ति को कृषि भूमि से परिवर्तित भूमि दर्ज किये जाने में आपत्ति या उजर दावा हो तो सुनवाई तिथि दिनांक 12/06/2026 तक या उसके पूर्व स्वयं या अपने मान्य अधिवक्तागण के साथ उपस्थित होकर अपना आपत्ति प्रस्तुत कर सकते है। निर्धारित तिथि के बाद प्राप्त आवेदन पत्र पर कोई विचार नहीं किया जावेगा।

आज दिनांक 18/5/2026 को मेरे स्वयं के हस्ताक्षर एवं न्यायालय के मुहर से जारी किया गया है।

अतिरिक्त तहसीलदार
भिलाई नगर

न्यायालय अतिरिक्त तहसीलदार भिलाई नगर, तहसील व जिला दुर्ग

-:: ईश्तहार ::-

एतद् द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि इस न्यायालय का रा.प्र. क्रं.अ-6/वर्ष 2025-26 में आवेदिका/आवेदक धमेन्द्र कुमार प्रजापतिआ./ध.प. किशोरी निवासी - कुरुद तह. दुर्ग व जिला दुर्ग द्वारा ग्राम कुरुद प.ह.न. 46 रा.नि.मं. कोहका व जिला दुर्ग स्थित भूमि स्वामी हक की भूमि खसरा नं. 258/34 रकबा 0.0090 हे. है। जो भूमि स्वामी आरती ध.प. धर्मेन्द्र के नाम पर दर्ज है। जिसमें भूमि स्वामी आरती ध.प. धर्मेन्द्र की मृत्यु दिनांक 21/11/2023 को फौत हो जाने के कारण मृतक का नाम खाते से विलोपित कर उसके वैघ वारिसानो का नाम दर्ज किये जाने हेतु आवेदन पत्र प्रस्तुत किया गया है।

अतः उपरोक्त भूमि फौती नामांतरण किये जाने पर जिस किसी भी व्यक्ति को आपत्ति या उजर दावा हो तो सुनवाई तिथि दिनांक 10/06/2026 तक या उसके पूर्व स्वयं या अपने मान्य अधिवक्तागण के साथ उपस्थित होकर अपना आपत्ति प्रस्तुत कर सकते है। निर्धारित तिथि के बाद प्राप्त आवेदन पत्र पर कोई विचार नहीं किया जावेगा।

आज दिनांक 21/05/2026 को मेरे स्वयं के हस्ताक्षर एवं न्यायालय के मुहर से जारी किया गया है।

अतिरिक्त तहसीलदार
भिलाई नगर

ऋचा और मैं अच्छे किरदारों के लिए जीते हैं, इमेज से ज्यादा कहानी मायने रखती है

अभिनेता अली फजल ने अपनी पत्नी ऋचा चड्ढा के साथ अपनी क्रिएटिव पार्टनरशिप पर खुलकर बात की। उन्होंने बताया कि दोनों कभी भी किसी खास इमेज में फिट होने की कोशिश नहीं करते। उनका फोकस हमेशा अच्छे और चुनौतीपूर्ण किरदारों पर रहता है। अली फजल और ऋचा चड्ढा दोनों ही अपनी अलग-अलग फिल्मों में चुनौतीपूर्ण भूमिकाओं के लिए जाने जाते हैं। अली फजल ने बताया, 'ऋचा और मैं हमेशा से ऐसे किरदारों की तरफ आकर्षित होते हैं जो हमें चुनौती दे और दर्शकों के दिल में जगह बना सकें, उन्हें पसंद आए। हमारे लिए ग्लैमरस इमेज बनाए रखना कभी प्राथमिकता नहीं रहा।'
उन्होंने इसे अपनी खुशकिस्मती बताया कि उन्हें ऐसे रोल मिले जो स्क्रीन से बाहर निकलकर पॉप कल्चर का हिस्सा बन गए। अली फजल के अनुसार, एक अभिनेता के लिए यह सबसे खूबसूरत एहसास होता है कि दर्शक उनकी बनाई हुई चीज से इतना जुड़ जाते हैं। उन्होंने उदाहरण देते हुए कहा कि ऋचा की 'फुकरे' वाली भोली पंजाबन और उनकी 'मिर्जापुर' वाली गुड्डू पंडित की भूमिका आज भी लोग याद करते हैं। ये किरदार इतने लोकप्रिय हुए कि लोग उनके डायलॉग दोहराते हैं और बार-बार फिल्म देखते हैं। अली फजल ने बताया कि किरदारों के चुनाव को लेकर उनमें अच्छी समझ है। दोनों ही इस बात का सम्मान करते हैं कि एक्टिंग का पेशा अनिश्चितताओं से भरा है। कभी रिस्क लेना पड़ता है, तो कभी सब्र रखना पड़ता है। लेकिन सबसे जरूरी बात है कहानी कहने में ईमानदारी। उन्होंने बताया, 'हमारी कोशिश हमेशा ऐसी कहानियों और किरदारों का हिस्सा बनने की रहती है जो लोगों के यादों में लंबे समय तक रहें। सिर्फ सफलता नहीं, बल्कि प्रासंगिकता बनाए रखना हमारा लक्ष्य है।' अली फजल जल्द ही 'मिर्जापुर- द मूवी' में नजर आने वाले हैं, जो 4 सितंबर को रिलीज होगी।

कुब्रा सैत ने बताया कैसे सलमान ने बदली किस्मत

अभिनेता सलमान खान स्टारर फिल्म 'रेडी' ने बुधवार को अपनी रिलीज के 15 साल पूरे कर लिए हैं। इस मौके पर अभिनेत्री कुब्रा सैत ने फिल्म से जुड़े अपने अनुभव शेयर किए। अभिनेत्री ने इंस्टाग्राम पर एक वीडियो पोस्ट किया, जिसमें उन्होंने बताया कि कैसे सलमान खान ने उनके रोल में डायलॉग जोड़कर उन्हें ज्यादा स्क्रीन टाइम दिया था। वीडियो में अभिनेत्री कहती हैं, 'फिल्म 'रेडी' में ऑडिशन में जाने के लिए मैंने ब्लैक ड्रैस पहनी थी और अनीस बज्मी के ऑफिस में आने और मुझे मंजूरी देने का इंतजार कर रही थी।' अभिनेत्री ने आगे बताया, 'यह ऑडिशन फिल्म 'रेडी' में एक नौकरानी के रोल के लिए था, और मैं इसे लेकर बहुत खुश थी। इस फिल्म को करते समय मुझमें बहुत आत्मविश्वास था, क्योंकि यह मेरे लिए बिल्कुल नया अनुभव था। इससे पहले मैंने कभी किसी फिल्म में काम नहीं किया था।'
अभिनेत्री ने बताया कि कैसे सलमान खान ने उन्हें सेट पर नोटिस किया और उनके किरदार में डायलॉग ऐड किए, जिससे फिल्म में उनकी स्क्रीन प्रेजेंस और निखर गई। अभिनेत्री ने कहा, 'असल में, फिल्म में मेरे पास कोई डायलॉग नहीं था, लेकिन सलमान सर ने कहा कि क्यों ने इसे एक ऐसी नौकरानी बनाया जाए, जो टूटी-फूटी इंग्लिश में बात करती हो। अनीस बज्मी को यह आइडिया बहुत पसंद आया और इसीलिए फिल्म में मेरे पास डायलॉग हैं।'
उन्होंने आगे कहा, 'उस समय हर कोई मुझसे कह रहा था कि मेरा दिमाग खराब हो गया है और मैं 'रेडी' फिल्म में काम करने के लिए कुछ ज्यादा ही उतावली हो रही हूं। लेकिन सच तो यह है कि अगर मैंने उस समय 'रेडी' फिल्म करने का पागलपन नहीं दिखाया होता, तो आज मैं 'कुकू' नहीं बन पाती। इसलिए कभी किसी काम को छोटा मत समझो; कोई भी रोल छोटा नहीं होता, बस एक्टर की सोच छोटी होती है। यह एक ऐसी सीख है जो मुझे जिंदगी भर याद रहेगी।

हॉलीवुड स्टार से बेटी की तुलना पर महिमा चौधरी ने दी प्रतिक्रिया

महिमा चौधरी अपनी बेटी को लेकर चर्चा में हैं। एक्ट्रेस ने हाल ही में सोशल मीडिया पर वायरल हो रही उन पोस्ट पर प्रतिक्रिया दी है, जिनमें उनकी बेटी एरियाना मुखर्जी की तुलना अमेरिकी एक्ट्रेस मिका अब्दुल्ला से की जा रही है। कई फैंस तो 'ऑफ कैंपस' की स्टार मिका को एरियाना की हमशक्ल भी कह रहे हैं।

एरियाना से मिलती हैं मिका अब्दुल्ला

सोशल मीडिया पर एरियाना चौधरी और मिका अब्दुल्ला के बीच तुलना को लेकर खूब चर्चा है। मिका, प्राइम वीडियो की पॉपुलर सीरीज 'ऑफ कैंपस' में ऐली हेस का किरदार निभाती हैं। कई यूजर्स ने यह भी बताया कि मिका काफी हद तक महिमा चौधरी के जवानी के दिनों की तरह दिखती हैं।

एरियाना ने नहीं शुरू की एक्टिंग

इस वायरल ट्रेंड पर हंसते हुए महिमा ने बताया कि उनके दोस्त, परिवार और फैंस लगातार उन्हें इस हॉलीवुड एक्टर के क्लिप और स्क्रीनशॉट भेज रहे हैं। महिमा चौधरी ने हिंदुस्तान टाइम्स से कहा, 'हां, मुझे पता है। मुझे वह (एरियाना) बहुत पसंद है, वह कमाल की है। दो अलग-अलग महाद्वीपों के लोगों में इतनी जबरदस्त समानता कैसे हो सकती है? यह समानता इतनी ज्यादा चर्चा का विषय बन गई कि कुछ लोगों को तो यह भी लगने लगा कि एरियाना ने एक्टिंग की दुनिया में कदम रख दिया है। मैंने उन्हें बताया कि उनसे अभी एक्टिंग नहीं शुरू की है।'

तुलना पर खुश होती हैं महिमा

महिमा ने कहा कि उन्हें ये तुलनाएं प्यारी लगती हैं। उन्होंने कहा 'किसी इतने प्यारे इंसान को देखना और यह सुनना कि आप दोनों एक जैसे दिखते हैं, बहुत अच्छा लगता है। मैं इस समानता से बहुत उत्साहित हूं क्योंकि मुझे वह बहुत प्यारी लगती है। अगर लोग कहते हैं कि मैं उसके जैसी दिखती हूं या एरियाना उसके जैसी दिखती है, तो मैं बहुत खुश होती हूं।

मेरे लिए ऐक्टिंग से ऊपर कुछ नहीं

'12वीं फेल' से सीधे दर्शकों के दिलों में जगह बनाने वाली मेधा शंकर की कहानी जितनी चमकदार दिखती है, उतनी ही जमीन से जुड़ी भी है। नेशनल क्रश का टैग मिला लेकिन उन्होंने इसे बोझ नहीं बनाया क्योंकि उनका फंडा साफ है, जिंदगी में ज्यादा लोड नहीं लेना। कभी इसी राह पर कदम रखने के फैसले पर घर में सवाल उठे लेकिन उन्होंने भरोसा नहीं छोड़ा। स्ट्रगल, रिजेक्शन और मेहनत के बीच मेधा ने खुद को अपने तरीके से बिना ज्यादा शोर के साबित किया। हाल ही में अपनी फिल्म 'गिन्नी वेड्स सनी' के सिलसिले में लखनऊ आईं मेधा शंकर ने हमारे साथ दिलचस्प बातें शेयर कीं, जहां पर्दे के पीछे की उनकी असली कहानी, संघर्ष और सोच बिना किसी लाग-लपेट के सामने आई।

मेंटली तैयार हों और सही इंसान मिले, तब शादी करें

मेधा शंकर ने कहा- मुझ पर कभी शादी का प्रेशर नहीं आया। दूर के रिश्तेदार जरूर कुछ कह देते थे लेकिन पापा-मम्मी ने कभी ऐसा दबाव नहीं बनाया। मैं शादी पर बहुत भरोसा करती हूं। मेरा मानना है कि शादी तब करनी चाहिए, जब आप मेंटली तैयार हों। सिर्फ जल्दबाजी में, समाज क्या बोलेगा, ताई-ताऊजी ने कुछ कह दिया, इन सब के दबाव में शादी नहीं करनी चाहिए। अगर आपने गलत इंसान से शादी कर ली तो कोई भी खुश नहीं रहेगा। मेरे हिसाब से ऐज या प्रेशर से ज्यादा जरूरी है कि आप शादी तभी करें, जब आप मानसिक रूप से तैयार हों और आपको सही इंसान मिल जाए, ताकि जिंदगी खुशहाल रहे।

अंदर से बहुत सीरियस हूं

मैं '12वीं' फेल की श्रद्धा जोशी जैसी ही हूं पर जब आप मुझे पर्दे पर गिन्नी के रूप में देखते हैं तो मैं काफी हद तक वैसी भी लगती हूं। असल में, गिन्नी वाली साइड बाहर वाले लोग नहीं देख पाते हैं। हालांकि अब मैं पहले से ज्यादा चिल रहने लगी हूं। अब फर्क नहीं पड़ता कि लोग क्या सोचेंगे। मैं ऊपर से गिन्नी हूं, लेकिन अंदर से सीरियस हूं। वक्त आने पर बहुत गंभीर हो जाती हूं। मैं बहुत शर्मिली बच्ची थी। मैं ऐक्टिंग से बहुत दूर थी। गाना मेरा पहला प्यार है। मैंने दो-तीन साल हिंदुस्तानी क्लासिकल म्यूजिक सीखा। मेरी दादी म्यूजिक टीचर थीं। मेरे पापा के साइड से लगभग सभी लोग अच्छा गाना गाते हैं। मगर अब मेरे लिए ऐक्टिंग से ऊपर कुछ नहीं।

साड़ी लहराने वाली हीरोइन के रोल कभी ऑफर नहीं हुए, मुझे हल्की फुल्की फिल्में भी चलेंगी

रसिका दुग्गल बॉलीवुड की उन गिनी चुनी एक्ट्रेसेस में से हैं, जिन्होंने पर्दे पर ग्लैमर से ज्यादा गंभीर, संवेदनशील, इंटेंस वाली फिल्मों और किरदारों को तरजीह दी है। साल 2007 में 'अनवर' से डेब्यू करने वाली रसिका की फिल्मोग्राफी में आपको ऐसी कई फिल्में मिल जाती हैं, जो लीक से हटकर, अंडररेटेड, लेकिन क्लासिक हैं। फिर चाहे 'किस्सा' के नीली का किरदार हो या 'मंटो' में बेगम साफिया का।

जब ओटीटी का दौर आया, तो वहां भी 'मिर्जापुर' से लेकर 'देल्ही क्राइम', 'आउट ऑफ लव' जैसी वेब सीरीज ने रसिका नाम एक समर्थ अभिनेत्री के रूप में दर्ज किया। 41 साल की रसिका हाल ही सैफ अली खान के साथ फिल्म 'कर्तव्य' में नजर आईं, जहां वह कर्म और धर्म के बीच अपना कर्तव्य निभाने की जद्दोजहद में जूझ रहे जीवनसाथी का संबल बनती हैं। खास बातचीत में जब रसिका ने यह जानने की कोशिश की गई कि क्या ऐसे गंभीर विषय ही उन्हें लुभाते हैं या कभी हल्के-फुल्के, कमर्शल प्रॉजेक्ट करने का भी मन होता है? तो उन्होंने तपाक से जवाब दिया, 'मैं खुद कुछ हल्का-फुल्का या कॉमेडी कॉन्टेंट तलाश रही हूं। लेकिन साड़ी लहराने वाले रोल मुझे ऑफर ही नहीं होते।'
जमशेदपुर, झारखंड में पैदा हुईं रसिका दुग्गल सिर्फ एक बेहतरीन एक्ट्रेस ही नहीं, बल्कि होनहार स्टूडेंट भी रही हैं। उन्होंने 2004 में दिल्ली के प्रतिष्ठित लेडी श्री राम कॉलेज फॉर वुमन से गणित में ग्रेजुएशन की डिग्री ली है।वह सोशल कम्युनिकेशंस मीडिया में पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा और एक्टिंग में पीजी डिप्लोमा कर चुकी हैं। 'नो स्मोकिंग', 'हाइजैक' और 'तहान' जैसी फिल्मों से छाप छोड़ चुकीं रसिका कहती हैं, 'मुझे हल्की फुल्की फिल्में भी चलेंगी। कमर्शियल न हो भी हो तो ठीक है।'

मैं भी चाहती हूं कि लोगों की इस धारणा को तोड़ सकूं

बकौल रसिका दुग्गल, 'मैं भी चाहती हूं कि ये जो धारणा है कि मैं किसी चीज में काम कर रही हूं तो वो इंटेंस ही होगी, उसे तोड़ तोड़ सकूं। आप सही हैं कि काफी बार मुझे ऐसे ही रोल मिलते हैं। कुछ हल्के फुल्के भी मिले हैं जैसे 'लूटकेस' या 'ह्यूमरसली यॉर्स', लेकिन मुझे और ऐसे रोल करने को मिले तो मुझे बहुत खुशी होगी। असल में मैं खुद ऐसा कुछ ढूंढ रही हूं। जैसे अगर कॉमेडी में कुछ करने को मिले तो बहुत मजेदार होगा। क्या रसिका दुग्गल कभी पर्दे पर रूमानी अंदाज में पहाड़ों पर साड़ी का पल्लू लहराने वाली हीरोइन की तरह नजर आएंगी? इस पर वह कहती हैं, 'क्यों नहीं, बतौर एक्टर हम किसी चीज के लिए मना नहीं करते। हम सब अलग-अलग तरह का ही काम करना चाहते हैं, तो अगर ऐसा भी काम मिले तो कोई परहेज नहीं है। मैंने तो कभी ना नहीं कहा। मुझे कभी ऐसे रोल के ऑफर ही नहीं आए।'

लगातार अच्छा काम मिलना भी बड़ी बात

रसिका बॉलीवुड में एक इमेज में बांध दिए जाने के बाबत आगे कहती हैं, 'मुझे लगता है कि उस इंटेंस-सीरियस वाले लेबल के अंदर भी हमें काफी कुछ करने को मिलता है। ऐसा नहीं है कि सारे इंटेंस रोल एक जैसे होते हैं। उसमें भी काफी विविधता होती है। वह भी बहुत अच्छी बात है। ऐसा सबकी लाइफ में नहीं होता कि आपको लगातार काम मिलता रहे और अच्छी स्क्रिप्ट मिलती रहे। साथ ही हर एक्टर चाहता है कि आपको एक अलग पहलू भी लोगों को दिखाने का मौका मिले लेकिन वो ऑफर मिलने की बात है।'

साप्ताहिक जलसा
स्वयंसिद्धा

पर्यावरण की रक्षा के लिए अगले 20 वर्षों तक एक भी पेड़ काटने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए

छत्तीसगढ़ की अग्रणी महिला संस्था स्वयंसिद्धा ए मिशन विद ए विजन द्वारा गत 7 वर्षों से प्रत्येक सप्ताह संगीत, साहित्य, संस्कृति, स्वास्थ्य, सिनेमा, फोटोग्राफी, कानूनी सलाह आदि समसामयिक विषयों पर नियमित स्तंभ चलाए जाते हैं जिनमें प्रत्येक मंगलवार परिचर्चा का आयोजन किया जाता है। अधिकारियों, जिम्मेदारों, नेताओं, मंत्रियों के विचार तो हम हमेशा सुनते हैं लेकिन आम गृहणियां और माताएं समसामयिक विषयों पर क्या सोचती है इस पर हमने कभी बात नहीं की। इस सप्ताह स्वयंसिद्धा के साप्ताहिक जलसा में परिचर्चा में विषय था- पर्यावरण की रक्षा के लिए गृहणियाँ कौन से कदम उठा उठाकर अपना योगदान दे सकती हैं

स्वच्छता दूत, नगर पालिक निगम रिसाली डॉ.सोनाली चक्रवर्ती कहती हैं

"हमें पेड़ पौधे लगाने का समय बदलना चाहिए। प्रत्येक वर्ष 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस के रूप में मनाया जाता है, जिसे संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा वर्ष 1972 में घोषित किया गया था। 5 जून का दिन संयुक्त राष्ट्र (वठ) द्वारा 1972 में स्टॉकहोम सम्मेलन की याद में तय किया गया था, ताकि 150 से अधिक देश एक ही दिन वैश्विक पर्यावरण संकट (जैसे क्लाइमेट एक्शन और इकोसिस्टम बहाली) पर ध्यान केंद्रित कर सकें।

पर 5 जून को भारत के उत्तरी और मध्य स्थानो पर सूखी तेज गर्मी पड़ रही होती है जिसमें इंसान तक मुरझा गए हैं। इस समय औपचारिकता के लिए पेड़/ पौधे/चारा लगाकर अखबारों में तस्वीर देने का औचित्य मुझे समझ नहीं आता।

होना तो यह चाहिए कि आप दो महीने बाद इस पौधे की तस्वीर लगाकर दिखाएं। गर्मी में हलकान होते हुए जिन पौधों को आपने जमीन पर लगाया जाकर देखना चाहिए उसकी क्या हालत है ?हर कोई अपने घर के चारों तरफ सीमेंटीकरण करवाने में व्यस्त है इससे बारिश का पानी जमीन में नहीं जा पाता। कुछ ऐसा किया जाए जो जमीनी नतीजा दे।

चूंकि 5 जून की तारीख एक अंतरराष्ट्रीय प्रतीक है और इसे बदला नहीं जा सकता, इसलिए भारत में इस दिन जागरूकता कार्यक्रमों (सेमिनार, सफाई अभियान, सिंगल-यूज प्लास्टिक के बहिष्कार के संकल्प) पर अधिक जोर दिया जाना चाहिए। वहीं पेड़ लगाने की मुहिम को मानसून के महीनों में शिफ्ट करना चाहिए। सबसे जरूरी है कि सरकार अगले 20 वर्षों तक एक भी पेड़ काटने की अनुमति न दें।

तालपुरी निवासी महिला उद्यमी पुनीता कौशल कहती है- "हमे ईश्वर ने प्रकृति रूपी उपहार प्रदान किया है इसको बचाना, उसकी देखरेख सिर्फ मनुष्यों की जिम्मेदारी ही है ,अफसोस जो आकड़ो के हिसाब से और पर्यावरण को देखते हुए प्रयत्न बहुत कम है ।अनेक पौधे लगाए जाते है उन्हें बचाने का संकल्प लिया जाता है पर सच्चाई ये है कि ना समय पर अधिकतर पेड़ पौधों को पानी मिलता है ना उनकी सही देखरेख हो पाती है ।सही मौसम के अनुरूप वृक्षारोपण हो ।पानी की बचत करना बेहद जरूरी है। कुछ घरों में नल खुला छोड़ देते है, पानी टंकी में चढ़ाने के लिए पम्प या मोटर का उपयोग करते है और बंद करना भूल जाते है ।ए सी का उपयोग ज़्यादा करने से भी पर्यावरण को नुक़सान होता है।

सेक्टर 4 निवासी शिक्षिका संध्या तिवारी का कहना है- " हम हाउसवाइफ सबसे पहले प्लास्टिक के थैली का उपयोग बंद कर सकती हैं। हम घर से कपड़े, जूट की थैलियां लेकर निकले तो पर्यावरण की रक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। साथ ही डिस्पोजेबल की जगह स्टील के डिब्बो, पानी की बोतलों का उपयोग किया जा सकता है।

अवधपुरी रिसाली निवासी रतना दुफारे का कहना है-"पर्यावरण को बचाने के लिए हम गृहणियां बहुत कुछ कर सकती हैं 'वैसे तो पर्यावरण संरक्षण हम सबका मौलिक कर्त्तव्य है 'पर्यावरण के सन्दर्भ में अनुच्छेद 51अ(ऋ) कहता है कि "भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह प्राकृतिक पर्यावरण, जिसमें वन, झील, नदी और वन्य जीव शामिल हैं, की रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा सभी जीवों के प्रति दया का भाव रखें। हम गृहणियां छोटे छोटे उपाय कर सकती हैं 'आखिर बूंद बूंद से ही घड़ा भरता हैं 'इसके लिए हम reuse, रीसाइकल और reduce वाला फार्मूला अपना सकते हैं 'किचन में उपयोग होने वाले फिल्टर का बेकार पानी और दाल चावल सब्जी को धोने का पानी पौधों में उपयोग करती हूं' सब्जियों और फलों के छिलके गाय के लिए डाल देती हूं 'बिना वजह लाइट पंखें नहीं चलाती' रोज आगंन नहीं धोती' वाशिंग मशीन भी सप्ताह में 2 बार ही उपयोग करती हूं।'

हुडको निवासी रूमा दे कहती है -"जीवन पुर्नतया प्रकृतिक पर निर्भर है प्रकृति ही हमे भोजन, पानी, शुद्ध हवा, प्रकाश आदि अनेक प्रकार से पालती है ।आज कल जहा एक तरफ वैज्ञानिक अनुसंधान और आधुनिकीकरण चल रहा है दूसरी तरफ प्रकृति का विलुप्त हो जाना चिंता का विषय है।

पर्यावरण संरक्षण का अर्थ है अपने आसपास की वातावरण को बचाना और शुद्ध रखना जिसमे सिर्फ पेड लगाना काफी नही है। पेड़ कटने से बचना भी जरूरी है। पर्यावरण को बचाने के लिए हम छोटे छोटे कदम उठाकर उसकी रक्षा कर सकते है। नदियों मे कचरा नही फेंकना, प्लास्टिक के पन्नी का उपयोग नही करना आदि छोटी आदतों में बदलाव चाहिए ।इससे केवल हम इन्सान को ही नही पशु- पक्षी सभी को नुकसान पहुंचता है। सूखे पत्ती, सब्जी के छिलके, पूजा के फूल का डीकंपोस्ट करके खाद बना चाहिए।

मैत्री कुंज निवासी प्रियंका सिंह कहती है -"आज के परिवेश को देखते हुए मुझे बहुत हद तक लगता है कि हमारे मौलिक कर्तव्यों में पर्यावरण संरक्षण को प्रमुखता से जोड़ देना चाहिए ।जिस तरह एक मकान की छोटी इकाई , एक ईंट होती है , वैसे ही एक राष्ट्र को समृद्ध बनाने में , मजबूत और स्वच्छ बनाने में उसकी छोटी इकाई हर एक नागरिक और उसका परिवार होते है। इसलिये पर्यावरण संरक्षण का काम अगर पारिवारिक स्तर पर किया जाए तो बहुत हद तक हम अपने मकसद (पर्यावरण संरक्षण)को पा सकते है ।

समान्यतः जो काम मैं अपने घर में पर्यावरण को ध्यान में रख कर करती हूँ उनमे से सबसे विशेष है अपने फ्ड फि ल्टर के वेस्ट पानी को एकत्र करके बर्तन धोने , सब्जी धोने इत्यादि जैसे काम में उपयोग करती हूँ। मैंने एक आर्टिकल पढ़ा था कि लैंडफिल में जाने वाले कचरा में सबसे ज़्यादा कपड़े का कचरा होता है। इस समस्या को गंभीरता पूर्व विचार करते हुए हम महिलाएं अपना सबसे बड़ा योगदान दे सकती है।

सेक्टर-4 निवासी आरती तिवारी कहती है-हम प्रतिदिन भगवान को पूजते हैं ।भगवान का वास्तविक अर्थ भ से भूमि ,ग से गगन अर्थात आकाश ,वा से वायु ,आ से अग्नि ,तथा न से निर इन पांचो तत्वों से ब्रम्हांड का निर्माण हुआ है यदि भगवान का पूजा करना है तो प्रकृति का पूजा करना ही वास्तविक स्वरूप संरक्षण है।

हम गृहणी घर के गमलों ,आंगन और सामने खाली जगह में पौधारोपण कर सकते हैं पर्यावरण के तहत घरेलू कचरे को एकत्रित कर डिब्बे मे डालना चाहिए, ताकि उसका निष्पादन सही जगह होना चाहिए कहीं भी कचरा जलाना नही चाहिए ,वायुमंडल प्रदुषित होता है प्लास्टिक का बहिष्कार करे व पानी को बचाने के लिए वाटर हार्वेस्टिंग कराना चाहिए जिससे वर्षा ऋतु का पानी एकत्रित हो सके। हमने एक कुआं का निर्माण करवाया है।

रुआबंधा निवासी शिक्षिका दुर्गा अधिकारी कहती है - "जो पौधे लगाए थे मैने, मां और सासूमां की स्मृति में, वो आज विशाल दरख़्त बनकर, पशु पक्षियों, जानवरों और मनुष्यों को शीतल छाया दे रहें हैं। अतः अब हमें यह सोचना है कि हमने फेसबुक पर फोटों खिंचवाकर जो पौधे लगाए थे क्या वे वास्तव में जीवित हैं कि नही ? हर वर्ष लाखों ? की संख्या में वृक्षारोपण हो रहा है तो वो हरियाली क्यूं नही दिखाई देती ? क्यूं देश की हवा इतनी प्रदूषित हो गयी है ये मेरा ही नही, किसी भी आम नागरिक का प्रश्न हो सकता है।

कलाकार ज्योति गांधी का कहना है -"सफाई मित्र के आने के पहले हमें सूखा और गीला कचरा अलग करके रखना चाहिए। गीला कचरा कम से कम घर के बाहर निकालना चाहिए इससे हम पर्यावरण संरक्षण में बहुत बड़ा सहयोग दे पाएंगे। हमारे देश में कूड़ा कूड़ेदान में डालने की आदत है हर नागरिक में आ जाए तो बहुत बड़ा परिवर्तन आएगा। इनके साथ ही कुदसिया अली, रीता वैष्णव, राजकुमारी कनोजे, अनीता पांडे आदि ने अपने महत्वपूर्ण विचार रखे।

22 विधाओं में 36 दिन चला प्रशिक्षण, सांसद बघेल बोले : जनता के साथ हूं

स्मृति नगर में निशुल्क समर कैंप का समापन, 1000 से ज्यादा ने लिया प्रशिक्षण

नई दृष्टिबिंदु /भिलाई

स्मृति गृह निर्माण सहकारी संस्था द्वारा स्मृति नगर में 17 वर्षों से चल रहे निशुल्क समर कैंप का रंगारंग समापन 6 जून को रवींद्रनाथ टैगोर उद्यान में हुआ। इस वर्ष 36 दिन चले कैंप में 22 विधाओं में 1000 से अधिक बच्चों और महिलाओं ने प्रशिक्षण लिया।

कैंप में बैडमिंटन, फुटबॉल, क्रिकेट, स्केटिंग, बॉक्सिंग, बास्केटबॉल, लॉन टेनिस, योगा, शतरंज, ड्राइंग, संगीत, स्पोकन इंग्लिश, मेहंदी, कुकिंग, सिलाई-कढ़ाई समेत 22 विधाओं का प्रशिक्षण दिया गया। समापन समारोह में प्रतिभागियों ने सीखे हुए हुनर का प्रदर्शन किया।

सांसद बोले : स्मृति नगर की अलग पहचान

मुख्य अतिथि सांसद विजय बघेल ने कहा कि सांस्कृतिक, साहित्यिक, धार्मिक और खेल आयोजनों के कारण स्मृति नगर सोसाइटी की भिलाई में अलग पहचान है। उन्होंने कहा कि संस्था की समस्या से वे वाकिफ हैं और स्मृति नगर की जनता के साथ हैं। वही होगा जो जनता चाहेगी।

वर्षभर चलता है खेल प्रशिक्षण

संस्था के अध्यक्ष राजीव चौबे ने बताया कि पिछले 19 साल में अधोसंरचना के साथ खेल और सांस्कृतिक कार्यक्रमों को भी बढ़ावा दिया गया है। आज स्मृति नगर में बास्केटबॉल, बैडमिंटन, जिम्नास्टिक, स्केटिंग, फुटबॉल, बॉक्सिंग और लॉन टेनिस का प्रशिक्षण वर्षभर चलता है। इन खेलों में स्मृति नगर के सैकड़ों खिलाड़ी राष्ट्रीय स्तर तक खेल चुके हैं। समारोह में प्रतिभागी बच्चे, अभिभावक और बड़ी संख्या में स्मृति नगर वासी मौजूद थे।

ड्यूटी के दौरान जवान ने सर्विस राइफल से खुद को मारी गोली, मौत

कोंडागांव। छत्तीसगढ़ के कोंडागांव जिले से एक बड़ी खबर सामने आई है, जहां सीएएफ कैंप में तैनात एक जवान ने ड्यूटी के दौरान खुद को गोली मारकर आत्महत्या कर ली है। मृतक जवान की पहचान जोगेंद्र नेताम के रूप में हुई है। एसपी ने थाना प्रभारी को सभी पहलुओं पर बारिकी से जांच करने के निर्देश दिए हैं। बताया जा रहा है कि मृतक जवान जोगेंद्र नेताम फरसगांव इलाके के उरंदाबेड़ा थाना अंतर्गत स्थित सीएएफ कैंप में तैनात था। ड्यूटी के दौरान ही उसने खुद को गोली मारकर आत्महत्या कर ली है। घटना की जानकारी मिलते ही उरंदाबेड़ा पुलिस तुरंत मौके पर पहुंची। खून से लथपथ घायल जवान को आनन-फानन में नजदीकी अस्पताल पहुंचाया गया। हालांकि, डॉक्टरों ने परीक्षण के बाद जवान जोगेंद्र नेताम को मृत घोषित कर दिया। मामले की गंभीरता को देखते हुए कोंडागांव एसपी पंकज चंद्रा तत्काल मर्च्युरी पहुंचे। उन्होंने वहां मौजूद मृत जवान के परिजनों से मुलाकात की।

एक कोना कविता का

चाटुकार

रोजमर्रा की तरह मैं काम में मशगूल था,
लोगों की दुनियादारी से कोसों मैं दूर था।
साक्षात दण्डवत चरणों में गिर पड़े,
कहा— "एक बार माफ कर दो, मेरा बड़ा कसूर था।"
ना मैंने सवाल पूछा, क्या गलती थी तुम्हारी,
जो माफी माँगने आना पड़ा शरण में हमारी।
जहरीली मुस्कान लेकर, नजरें झुकाकर बोले,
"दगा कर रहा हूँ आपसे, आप इंसान हो बड़े भोले।"
ना चरण छोड़ रहा था, दे रहा था रिश्तों का हवाला,
वाकिफ था उसकी रग से, फिर भी माफी दे डाला।
अब हमसे नजर मिलाने में आँखें चुरा रहे हैं,
गिरगिट जी अपना रंग आज भी दिखा रहे हैं।
ये आदत है उनकी, बातों से मुकर जाते हैं,
जरूरत पड़ने पर चाटुकार बन जाते हैं।

– डॉ. अरुण मिश्रा "अकेला"

"यह समाचार पत्र आलोक तिवारी द्वारा 80/बी, मैत्री विहार, राधिका नगर, सुपेला, भिलाई, जिला दुर्ग, (छत्तीसगढ़)-490023 से आलोक तिवारी की ओर से प्रकाशित की जाती है, जिसका संपादन आलोक तिवारी द्वारा किया जाता है तथा इसका मुद्रण समय दर्शन प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स द्वारा प्लॉट नं. 339/6, गली नं. 02, पाटन, थाना उतई, दुर्ग, (छ.ग.)-491111 पर किया जाता है। (समाचार चयन के लिए PRP Act, 2023 के तहत संपादक जिम्मेदार है)। समस्त विवादों का निपटारा न्यायालयीन क्षेत्र दुर्ग होगा।" संपादक आलोक तिवारी, मो. 74154-69100